

श्री वं नीता
शुभा
हास्या
विषय
द्वैत
हास्या
विषय
श्री

श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री

श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री

श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री
श्री

28/3

ASHA ARCHIVES 3566

१

ॐ नमो राजा नमः ॥ प्रताप्यशिरसा विसृज्य लोकाधिपतिप्रभु ॥ नानाशास्त्रोक्तं दक्षः राजनीतिप्रभु
 यः ॥ ॥ त्रिभुवनका अधिपतिः श्रीविष्णुको नमस्तस्मात् ॥ नानाशास्त्रो देवीनिकाशिकाको राजनीति
 कुशे मम दुः ॥ १ ॥ ॥ अविज्ञैव सिद्धं शास्त्रं नो ज्ञास्यति तत्त्वतः ॥ धर्मोपदेशविनयः कार्याका
 र्यं शुभाशुभं ॥ ॥ निश्चयगिरिमानिसले कोशास्त्रधारणा गद्यादेवी धर्म अधर्म जानता ३
 पदेशवन्त होला कार्य अकार्य शुभ अशुभ सर्वे जानता ॥ १० ॥ तदहं संप्रदक्षामि ना
 नाहित कामया ॥ येन प्रज्ञाप्रवर्द्धते मातैव हितकारिणी ॥ ॥ मानिसको हीतगर्ना निनि
 तले गक होला कोहि दुखि वंत ले योशास्त्र ज्ञान्या मात्रे महतारी ले हीतगया जे योशास्त्र

११७ चाणक्य नीति

हे हीतगर् ॥ ३ ॥ ॥ मूलसुत्रं प्रवक्ष्यामि चानके ननु माधितं ॥ येन विज्ञानमात्रेणा सर्व
 शोते हि जायते ॥ ॥ अघी चानक आसिते कल्या को मूलसुत्र कुल मक होला कोही मनुष्य
 ले योशास्त्र ज्ञान्या मात्रे जसो परमेश्वर ले भूत भविष्य वर्तमान जायते ते ते जाना सले जान
 ता ॥ ४ ॥ ॥ मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टास्त्री भरते न च ॥ धिक्वता संप्रयोगा पतिश्रोवेव
 सीदति ॥ ॥ मूर्खशिष्यालाई उपदेशादिन्या दुष्टस्त्रीलाई दसगहनादिन्या एकवेरफा
 त्याका शत्रु संगमि लेन्या एतिगन्या पछि जानी पछि तद्विदितवनी दुःख पाडुं ला ॥ ५ ॥ ॥
 गुणिभी सहसं पक्कं पणिउतै सहसं रुपा ॥ ॥ ज्ञानी सहसि वनी कुर्वी नो न वसीदती ॥ ॥

प्रसंगगर्नुगुणीकसंगः कुतागर्नुजानीपंडितसंगः ननुकुलदंतसंगः यशोगर्नुकोडुःखं
 देनः ॥ ६ ॥ ॥ इमत्रानां भुजंगानां मधुप्राणां तदंशिनो ॥ स्त्रीतां राजकुलानां वः विश्वासंति
 गतायुषः ॥ ॥ लौलाहासंगः संप्रसंगः जांडलाग्यासंगः हानीसंगः स्वास्त्रीसंगः राजासंगः
 सत्तिसंगः विश्वासगत्यादेवी जीवजांदावेरुं देनः ॥ ७ ॥ ॥ वरीनीसहविश्वासं यो नरकात्
 निरुति ॥ स वक्ष्ये सुसंस्पृष्ट पतितप्रतिबुद्धते ॥ ॥ जोमान्नीसवेरीसंगः विश्वासात्
 जोमान्नीसः स्वकाहांगासासुतीकनवस्याजस्तोहं ॥ ८ ॥ ॥ धनधान्यप्रयोगे सुविद्यास
 ग्रहो सु ॥ आहारं व्यवहारे सुते कलस्त्रोमदाभवेत् ॥ ॥ धनवलेन नामाः खोलीवरी

लनामाविद्याशिकनमाः धानमाः व्यवहारमाः सत्तिमाः दाताजिह्वाडनुवाहिं ॥ ९ ॥ ॥ नगुरुशदृशीमाता
 नगुरुसदृशीपिता ॥ येस्तारेतीमहाद्यौरः संसारोद्विद्धुं ॥ ॥ गुरुसमानकामहतारीपनीहोइतरा
 वावापनीहोइतरव्यानभन्यागुरुलैताः योदुष्टसमारः समुद्रपारगराडुं नरः आमावावुभंडागुरुव
 डा ॥ १० ॥ ॥ मातागंगासंतोर्धः पितापुष्करमेवव ॥ गुरुकेशरसंतोर्धः मातागंगा पुनः पुनः ॥ ॥
 महतारीभयोतीर्थगंगाजलजलोः दावाभयोतीर्थपुष्करजलोः गुरुभयोतीर्थकेशरजलोः महत
 रीमात्रवारंवारगंगाजलजलोः ॥ ११ ॥ ॥ विद्यारूपं कुरुपाणीः क्षमारूपं तपस्विनां कोकीला
 नीसरूपं नारीरूपं पतिव्रताः ॥ ॥ कुरुपाणीरूपं विद्याः कोकीलपंथीकोरूपं स्वरा ॥ अस्त्रीकोरूप

पतिव्रता तपस्विको रूपक्षमा ॥ १२ ॥ ॥ न चादि शासनो व वृत्तव्याधिसमोरि ॥ न चापत्य लमत्ते ह
 न च देहात्परं बलं ॥ ॥ विद्यावते वरयारभाद्र अर्को ह्येन रोगवरो वरशत्रु अर्को ह्येन दोराहोरी वर
 वरत्ने ह अर्को ह्येन देवदेवी वलिया अर्को ह्येन ॥ १३ ॥ ॥ विद्याप्रकाशिनो मित्रं भाष्यो मित्रं गुरु
 व ॥ आतुरस्यैष धर्मिर्त्रय धर्ममित्रं परत्रयः ॥ ॥ नरदेशको मित्रविद्या चरको मित्रस्त्री रोगको मि
 त्र औषधि परत्रको मित्रधर्मः ॥ १४ ॥ ॥ दुराक्षिता विषविद्या अजीर्ता भोजनं विषं ॥ विषं मारि
 दारिद्र्यस्य वृद्धस्य तस्मात् विषं ॥ ॥ देहै दिनशया देवी आयाको विद्यापनी विषहुं ह अजीर्ता
 गरीषायाको अंनपनी विषहुं ह दारिद्र्यजनताङ्गो हि हस्तपनी विषहुं ह बुढामानिसलार्हं तत्

रास्त्रास्त्रीपनी विषहुं ह ॥ १५ ॥ ॥ अनाभ्यासै हता विद्या निग्रहासै हतास्त्रिये ॥ कुवीर्यं न हतं क्षेत्रं
 मृत्योर्बोहतो न पः ॥ ॥ अभ्यासश्चापदि पश्याको विद्यानासिद्धे व्यर्थं लेनि त्परां स्या स्त्रास्त्रीप
 नी नाशहुं ह बुधदिभया धेतको नाशहुं ह मंत्रादिपाराजाको नाशहुं ह ॥ १६ ॥ ॥ यस्य पुत्रो
 न विद्वान् न शूरो न च परिउतः ॥ अंधकारं कलंतस्य न च नैव सर्वरी ॥ ॥ जस्ते दोराज्ञानी ह्येन
 पण्डितः न शूरोपनी ह्येन ते लो कुल अंधारो चंद्रमानभयाको रात्री जस्तो ॥ १७ ॥ ॥ सर्वरी
 दीपकः चंद्र प्रभातेरविदीपकः ॥ त्रैलोक्यदीपकः धर्म सुपुत्र कुलदीपकः ॥ ॥ रात्रीको दीपश्च
 द्रमा दिनको दीप श्रीसूर्य त्रैलोक्यको दीप धर्म कुलको दीप सुपुत्र दोरा ॥ १८ ॥ ॥ जनेता दीपने

४

तावो यत्तु विद्यां प्रयच्छति ॥ अन्नदाता मयं ज्ञाता पंचैते पितरस्मृता ॥ ॥ वावुः ससुराज्यः गुरुः भोक्त
 माषानो दिव्याः भयमारक्षा गन्याः यो पांचजना लाइ वावा भंनु ॥ १२ ॥ ॥ गुरुपत्नी राजपत्नी मि
 त्रपत्नी तथैव च ॥ पत्नी माता स्वमाता च पंचैते मातरस्मृता ॥ ॥ गुरुको अस्त्री राजाको अ
 स्त्री मित्रको अस्त्री सासु महतारी आफु कामहतारी यो पांचजना लाइ महतारी भंनु ॥ २० ॥
 लाइयतं च वर्षाणि दशवर्षाणि तादृयत ॥ संप्राप्ते सोऽशौचं पुत्रमित्रं समाचरेत् ॥ ॥
 ज्ञानी जनलेखो राहेरु लाइ पांचवर्ष संम आक्राष्टुसी मारहनु रिनु दशवर्ष संम अहानुप
 हाउनु शिकाउनु शोहवर्ष को छोरोहुं जी वावु छोरा ले मित्र भाव गरि रहनु रैगनु छैन ॥ २१ ॥

४

लाउना दहवो दोषा ताउना दहवो गुणान् ॥ तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयत्तु लाइयत ॥ ॥
 केन केन लाइ आक्राष्टुसी गरस्या अनेक दोष हुं छ अदपदीकन सडाइ सिक्का इरास्या अ
 नेक गुण हुं छ तस्कारता ले आक्राष्टोरा भयापनी शिष्य भयापनी अदपदीकन रहनु ॥
 २२ ॥ ॥ रुचिरभ्यास यो स्यातां प्रज्ञायां किं प्रयोजनं ॥ तावु भौय दिन त्योतां प्रज्ञायां की
 प्रयोजनं ॥ ॥ जस्का पदनु मनपनी छन अभ्यासपनी छन बुद्धि न भयापनी पदनु
 न त्यो मनस्य जी हांगयापनी जिनि छ ॥ २३ ॥ जो मानी लको अभ्यासपनी छैन पदनु
 मनपनी छैन बुद्धि न भयापनी पददेन त्यो प्रज्ञावंत लेका प्रयोजन छ ॥ २४ ॥ ॥

पुत्रास्तु विविधैः शास्त्रैः त्रियो ज्योत्सतंतु कानि तज्ञा बुद्धि संपन्न भवंतु खलु पूजिता ॥ ॥
 ज्ञानी जन लेखो रा हेरुलाइ बहु विधी का शास्त्र मा. ताउनु. शास्त्र ज्ञान्या देखी. ज्ञानी हुँ छ
 सर्वे ले मान गछ ॥ २४ ॥ ॥ पठ पुत्र किमालस्य. न पथो भारवाहक ॥ पठतः पूजितो
 राजा पठ पुत्र दिने दिने ॥ ॥ चानक मणिले छोरा हेरुलाइ. बि का उछन. हे पुत्र होत तार
 न मन लाइ प हुनु सका. राजा काजी को मान पाउं ला. न पस्या भाडी वो क नु पला ॥ २५ ॥ ॥
 गुणेषु क्रियतां यत्न किमातो पे प्रयोजन ॥ विक्रियं ते न द्यात्ता मि. गाव क्षीर विवजिः
 ता ॥ ॥ गुण शि ब क न मा ज त ग र. आ ल स्य ग री व स्या क्य प्र यो ज न छ. उ द न हु न्या था

शी गड्का गला मा. धरु डाइ क न. मोल जां दे न ॥ २६ ॥ ॥ नरस्या भरां रूपं. रूप स्या र
 शां गुता ॥ गुता स्या भरां ज्ञानं. ज्ञान स्या भरां क्षमा ॥ ॥ मनुष्य को गहना रूप. रूप को ग
 हना गुता. गुता को गहना ज्ञान. ज्ञान को गहना क्षमा ॥ २७ ॥ ॥ गुणं पद सिमरूपं. शीलं प
 द सिमा कुल ॥ सिद्धि पद सिमा विद्या. भोगं पद सिमा धन ॥ ॥ रूप का शोधनु. गुण
 शोधनु. कुल का शोधनु. शील शोधनु. विद्या का शोधनु. सिद्धि शोधनु. धन का शोधनु
 दान भोग शोधनु ॥ २८ ॥ ॥ अगुण स्य हर्त रूपं. अशील स्य हर्त कुल ॥ असिद्धि स्य हर्त
 विद्या. अभोग स्य हर्त धन ॥ ॥ गुण विना रूप स्य हर्त. शील विना कुल स्य हर्त ॥

सिद्धि विना विद्या सुहाउं दैन. दान भोग विना धन सुहाउं दैन ॥ २८ ॥ ॥ गुण भूषायते रूपं शी
लं भूषायते कुलं ॥ सिद्धिं भूषायते विद्या. भोगं भूषायते धनं ॥ ॥ रूप को शोभा गुण. कु
ल को शोभा शील. विद्या को शोभा सिद्धि. धन को शोभा दान भोग ॥ २९ ॥ ॥ सुकुले योज केच
पुत्र विद्यां सुयोजयत् ॥ वसने योजयत् रत्नं मित्र धर्मं सुयोजयत् ॥ ॥ छोरी कुल वतल
गला इदिनु. छोरी विद्या वतल गला इदिनु. शत्रु कु वा दो ला इदिनु. मित्र ला इ धर्म वा जो ला इ
दिनु ॥ ३० ॥ ॥ नात्युच्चिखिरो मेरु. नाति निम्न रसातल ॥ व्यवसाये सहायानी. नाति पा
रोमहारि ॥ ॥ उद्यम गत्या. सुते रूप वतका. जपुपनी पुन सकिंदू. पाता लपनी ज्ञान सः

किं छ. सागर समुद्र पनी पार गर्नु सकिंदू. तसर्थ ज्ञानी जन ले उद्यम गर्नु ॥ ३१ ॥ ॥ श्लो के
न चतदर्थेन. पा देने का क्षेरेन च ॥ अवध्या दिवसं कुर्या. दाना ध्ययेन कर्मात् ॥ ॥ अखंडित
गरि स क्या. दिन को एक श्लोक पढ़नु. उन्निपनी न सक्या. आधा श्लोक पढ़नु. उन्निपनी न सक्या
एक पा उ श्लो क पढ़नु. उन्निपनी न सक्या. दिन को एक अक्षर पढ़नु. उन्निपनी न सक्या को. निम
दान गर्नु. ठोरे लेटे है दुंछ ॥ ३२ ॥ ॥ योजनानां सहश्रानि. व्रजं न्याति पिपिलिका ॥
अगच्छन्वैन ते योपि. पदमेकं न गच्छति ॥ ॥ दिन २ अखंडित गरि हिया देखी. क
मिलो पनी. हजार लाख को स जिमी पुगंछु. नाहि डी वसी रखा. गरु ड भया पनी. एक पा

उपेनीवलेनन॥ तसर्थलेज्ञानीजनलेउद्योगगर्नुवाहिं॥३४॥ ॥दानैरर्थादानेविद्याश
 नेपर्वतमासुहा॥ दानैर्धर्मश्रुकासश्रुवायांमश्रुदानैदानै॥ ॥धनकमाउनुविद्यापहुनु
 पर्वतचहुनु॥ धर्मगर्नु॥ योवारथोकटिलोहुं॥३५॥ ॥गुरुसुश्रुषयाविद्यापुष्कर
 नधनेनवा॥ अथवाविद्यायांविद्याचतुर्थोपलभ्यते॥ ॥विद्यापाउनुवारप्रकारले
 गुरुकोसेवागरीकनअथवाधनदीकनअथवाविद्यालेविद्यासाती॥ अथवाधर्मदीकनु॥३६
 ॥ ॥एकाक्षरप्रदातांर्योगुरुनामिमंज्यते॥ स्नानयोनीशतंगत्वा॥ वातालेस्नपिजा
 यते॥ ॥एकगोटाअक्षरशिकाउन्मा॥ गुरुदत्तपनी॥ गुरुलाभनिंदामन्या॥ शयवेरकु

सिकत
 श्री
 ७

कुरकोजन्महुं॥ पछिचांडालको॥ कोषमाजन्महुं॥३७॥ ॥पुष्कंठप्रत्ययोधीतं॥ नाशितं
 गुरुसंनिधौ॥ नशोभतेसमासध्य॥ जालगर्भद्वस्त्रिय॥ ॥जोमनुष्यले॥ गुरुदेउनहीक
 न॥ आफैलेपुष्कंठहेरीपद्माकोशास्त्र॥ जालेवाटछोरोजन्माउन्मा॥ स्थास्तीजस्तो॥ त्योविद्याशा
 भामाशोभितहुंदेन॥३८॥ ॥शिल्लिकोलमनालस्य॥ परिउत्थमित्रसंग्रहः॥ अचौरह
 नीविद्या॥ पंचैतेअक्षयोनिधी॥ ॥कोंठकर्तिकोंठम॥ दुंगाकर्तिकोंठम॥ अलसीनदु
 नु॥ शास्त्रशिकनु॥ पंडितसंगमित्रगर्नु॥ योपांचठोक॥ चोरलेचोरिकननाशहुंदेन॥ अ
 क्षयभंडारहो॥३९॥ ॥नहिजन्मनिजोप॥ चंगुतामुचाते॥ गुतागुता॥ नरं

त्रि. प्रयोदधीद्यतं यथा ॥ ॥ जन्म जे कुल ॥ गुणान्याला इ जे ठो भंनु ॥ ४० ॥
 परिष्ठाक शोभन्या दुदको दही हुंछु दहिको व्युद्धु सति प्रभा न ले जे ठो भंनु ॥ ४० ॥
 किंकुले न विशाले न गुणवान् पूजितो नर ॥ धनुवंश विशुद्धो पि निर्गुणो किं करिष्याति
 ॥ ॥ तिको कुलले का प्रयोजन छु वरिद्या गुणान्याला इ पूजा गर्छन् धनुवंश राजा का
 छोरा निर्गुणी भया क्या काम गर्त्ता ॥ ४१ ॥ ॥ किंकुले न विशाले न विशाही न सुयो नर ॥
 अकूली नो पितृद्वारो देवते वापि पूज्यते ॥ ॥ वडा कुल छु तपनी विशाही न भयाप
 दि का प्रयोजन छु विशाही न भया ही न जात छु तपनी जसै देवता ला इ मान्य गर्छु ते

श्री

सैमान होला ॥ ४२ ॥ ॥ नावर्धिरुभवे द्विधा यावत्पारं न गच्छति ॥ उत्तिर्गोचगते पारं नो का
 यां किं प्रयोजनै ॥ ॥ डुंगार विशा वरो वर दुन् कशोभन्या समुद्र पार न भया संम डुंगा को
 कां मलागी रहैछु समुद्र पार भया पदि डुंगा का प्रयोजन छु ॥ ४३ ॥ ॥ गुणा सर्वत्र
 पूज्यंते पितृवशो निरर्थकः ॥ वासुदेवन मे श्रुति वसुदेवो न ते जना ॥ ॥ सर्वत्र था उमा
 गुणको पूजा गर्छन् वा बुद्धो रो भंनु हुं देन कशोभन्या गुणा दुनाले श्री कृष्ण लाई सवे
 ला कले पूजा मान्य गर्छन् तेस्को वा वा वसुदेव लाई वीहि पूजा गर्दैन ॥ ४४ ॥ ॥ गुणा
 कुर्वन्नि दूरत्वं दूरे पी वसतां सतां ॥ केटको गंधमाप्रायो स्वयं गच्छति यद्वपदा ॥ ॥

गुणीजन ॥ राजावस्था दूतपनी जसौ के कंकाल को सुवास ले भवरा लेख जी कन जांछ
 ते लै लोक हर बांही पुग्छु न ॥ ४५ ॥ ॥ विद्या त्वै च नृप त्वै च न हितु ल्य पर क्रमः ॥ स्वदेशे
 पूजितो राजा विद्या सर्वत्र पूज्यते ॥ ॥ राजा पनी विद्या र्वत मानिस को तुल्य हुं दैन कशौ
 भन्या राजा को मान्य आ फारा ज्य भितर मात्रै पर राज ले मान्य ग दैन विद्या वत मानी सत
 जाँहँ सुखे गथा पनी मान्य ग छुन ॥ ४६ ॥ ॥ एके नापि सुपुत्रे ता विद्या युक्ते न साधुना कु
 लं पुरुष सिंदेन च न्युनै व प्रकाशते ॥ ॥ जस्को छोरा सुपुत्र विद्या युक्त भया साधु भ
 या कुल को स पूत सिंह जसो पराक्रमी भया जसौ च न्युमा को किरा लै की विप्र काश

श्री
 र

गछुन ते लौ कुल प्रकाश गछुन ॥ ४७ ॥ ॥ विद्या भाजनं कश्चित् कश्चिद्व्यस्य भाजनं ॥ ३
 भयो भाजनं कश्चित् कश्चिन्मोक्ष भाजनं ॥ ॥ कोहि विद्या पाउं छुन कोहि धन पाउं छुन को
 हि विद्या र धन दुवै थो क पाउं छुन कोहि विद्या पनी धन पनी पाउं दैन ॥ ४८ ॥ ॥ नमं
 ति फलिनो हक्षान मंति गुणिनो जना ॥ शुक्क काष्ठ च मूर्ख च भिद्यते न च मन्यते ॥ ॥
 फल फल पाको सुख पनी नं मुछ गुणी जन पनी नं मुछ शुका को कांठ र मूर्ख मानिस
 न भ्र पनी हुं दैन चोरी पनी हुं दैन ॥ ४९ ॥ ॥ नहि कर्मणि च त्वारि संध्या काले प्रयो
 जयत ॥ आहार मेधुनं निद्रा साधा स्वाध्याय मेव च ॥ ॥ यो चार कर्म संध्या काले मा

नगर्नु का काभन्या. आरि मेधुन निद्रा. वेदपाठ. यन्त्रिक. संध्या कालमानगर्नु ॥ ५० ॥
 आहार जायते व्याधि. गर्भ कूरु श्वजायते ॥ अलक्ष्मी कश्च सूर्यायां. सपाठा इयुष क्षयः ॥
 संध्या कालमाया को रोगी कुंठ. मेधुन गग्या कपूत हो रोजम् ॥ सुत्या देवी लक्ष्मी वसदे
 न. वेदपाठ गग्या देवी. आयु क्षी न्मु ॥ ५१ ॥ वेद वेदांग तत्त्वज्ञो. जप होम पठयता ॥
 आशिर्वा दपरो नित्य. एष राज्ञा पुरोहित ॥ ॥ को हि बालता. वेद वेदांग तत्त्व ज्ञान्या. जप
 होम गर्नु ज्ञान्या. नित्य आशिर्वा ददिन्या. एते बालता कनरा जाले प्रोहित गर्नु ॥ ५२ ॥
 प्राज्ञ तिग्मो महीपाले. छिद्र कर्म विवर्जितः ॥ विदुरे वपरित्यागी. सम दुःख सम सुखः ॥

श्री
 १०

ज्ञानी कोमल. छिद्र वन. नबोलन्या. दुःख सुख वरो वर ज्ञान्या. एते कनरा जाया पनु ॥ ५३ ॥
 कुलशील गुणोपेत. सत्य धर्म पायता ॥ प्रवीन पेशलो दक्षो. राजाध्यक्षो विधीयते ॥ कु
 लवंत. शील वंत. गुण वंत. सत्य वंत. धर्मिष्ठ. वनुर विरक्षता. क्षमा वंत. एते कनरा जागर्नु ॥
 ५४ ॥ ॥ कूरु वर निनं लुब्धं. मप्रगर्भ सार्जवः ॥ अनायेक यकर्त्तारं. नाधिपत्यं निजोः
 जयेत् ॥ ॥ क्रोधि. लोभा. व्यशनी. अज्ञानी. गुमानी. विकाम लोधन उडा उन्मा. स्वास्ती माधी
 भुली रहन्या. एताला इरा जान गर्नु ॥ ५५ ॥ ॥ मूल हन्ति हि तो धीर. सर्व रत्न परिक्षकः ॥ भु
 विस्थ व्यवसाइ च. धार्मिष्ठो विधीयते ॥ ॥ ज्ञाता ग्या को कां समा निश्चय गन्या. धैर्य व

तं स्वतोय बहिरगर्भं शीलवतं एतौ लोकादौ रगर्भं ॥ ५६ ॥ ॥ आयुर्वेदवृत्ताभ्यासः सर्वज्ञ
 प्रियदर्शनः ॥ आर्यशीलगुणोपेतः येष वैद्यो विधीयते ॥ ॥ वैद्यंगशास्त्रमाभ्यासः
 सगर्भः नाडीभेदोषधोज्ञान्या गुणावतं शीलवतं लोकसंगमिलन्या एतौ कनः
 वैद्यमनु ॥ ५७ ॥ ॥ पितृपितामहोदयोः शास्त्रज्ञो भिक्षुपाचकः ॥ तु विद्वत्कथिनश्चैवः
 श्रमकारं प्रसूयते ॥ ॥ वावुवराज्यदेवी शास्त्रज्ञान्या मिठोगरिपकाउमोज्ञान्या शुचि
 सितरहस्या कुचिनद्रुन्या एतौ कनभास्या गर्भं ॥ ५८ ॥ ॥ सकृद्वृत्तगृहीतार्थो लघुहस्त
 जिताक्षरः ॥ सर्वशास्त्रसमालोकी एष लोचक उच्यते ॥ ॥ एकैवेरभंडा अर्थवृत्तान्या अ

श्री
 ११

क्षराग्नोगरी वाजोलेषन्या सर्वेशास्त्रमाभ्यासगर्भः एतौ कनलोचकभंनु ॥ ५९ ॥ ॥
 ईगिताकारतत्त्वज्ञो बलवान्प्रिदर्शनः ॥ अश्रमादिसदादक्षो प्रतिहारस उच्यते ॥ ॥ कौ
 मकुगको गाथिज्ञान्या बलवतं लोकसंगमिलन्या सर्जन विचक्षता एतौ कनसर्दारभ
 नु ॥ ६० ॥ ॥ समस्तकृतशास्त्रज्ञो परितुष्टश्च जिताश्रमः ॥ धैर्यसौम्यगुणोपेतः सेनाध्य
 क्षो विधीयते ॥ ॥ दिनोपनी लिनोपनीज्ञान्या शास्त्रज्ञान्या पंचवर्गिन्द्रियजित्सकन्या
 धैर्यवतं गुणावतं शूरो वीरः एतौ कनकाजी गर्भं ॥ ६१ ॥ ॥ अतयेव कुलानामादया
 कुर्वन्ते स गृह ॥ आदिमध्यावशानेषु न ते यासेति वि क्रिया ॥ ॥ कुलवतं शीलवतं दया

८५

वंतः समस्तवत्संगुहगर्भाः अघी पश्चिर्बर्तनगर्भाः एतौ कनभंडारीगर्भः ॥ ६२ ॥ ॥ समस्त
हयशास्त्रज्ञो वाहनेषु पराजितः ॥ सौम्यवीर्यगुणोपेतः अस्वाध्वक्षो विधीयते ॥ ॥ संपूर्ण
अस्वशास्त्रज्ञानाः घोडाको सबलक्षणावुज्ज्याः दोडा दाउनु सिपालुः शूरो वीरः गुणवर्तः एतौ क
नः असुवागर्भः ॥ ६३ ॥ ॥ मेधाविवाक्यनुप्राज्ञो परचित्तो परक्षकः ॥ धीरो यथोक्तवादी च ॥
अदूतो विधीयते ॥ ॥ मुखरात्रो वचनवरिण्याः परायाको चित्तवुज्जुः उन्नोतकन्याः धैर्यः
वीरः युक्तार्थबोद्धव्याः एतौ कनदूतपठाउनु ॥ ६४ ॥ ॥ पार्थिवस्य वभत्सस्य वदामि
गुणसंज्ञां ॥ येन सर्वं दृते गताः भाग्यद्वारस्तथैवः ॥ ॥ राजाको रमणीको गुणल

श्री
१२

क्षणाकहौला जशेराजावठायो ते सलाइ भंडारीगर्भः ॥ ६५ ॥ ॥ पण्डितेषु गुणा सर्वे मू
र्वदोषास्तु केवलाः ॥ तस्मात्सर्वसहश्रेण प्रज्ञामेकं प्रशस्यते ॥ ॥ सर्वगुणज्ञानी ज
नहेउजांछे सर्वदोषपूर्वहेउजांछे तत्कारणाले हजारसर्वछाडी कनः एकज्ञानी ज
नलाइ लिनु चाहिंछे ॥ ६६ ॥ ॥ प्राज्ञे नियोग्यमाने तु संतिराज्ञो त्रियोगुणाः ॥ यशः स्व
र्गनिवासश्च पुष्करश्च धनागमः ॥ ॥ ज्ञानी नलाइ लाया कें ममा राजाले तीन गुणा पा
उंला जश प्राप्तिहोला लक्ष्मी वृद्धिहो परत्र स्वर्ग प्राप्तिहोला ॥ ६७ ॥ ॥ पूर्वनियोग्यमा
ने तु त्रियो दोषा महीपते ॥ अयशः स्थार्थनाशश्च नरके पटनं क्रवः ॥ ॥ पूर्वलाइला

या कां नमा. राजा लेती न दोष पांडला. अपजश. धन को नाश. नर्क को वास ॥ ६८ ॥
 तस्माद्भूमेऽवते निर्य. धर्म कां मार्थ वृद्धये ॥ गुण वीत नियो ज्यंते. गुण हीनं विवर्जय
 त् ॥ ॥ तसर्थ राजा ले. धर्म. अर्थ. काम. वडा उना कन. गुणी जन को सै गजो नु. गु
 णा हीन लाइ छोडनु ॥ ६९ ॥ ॥ यत्किंचित्कुरुते भूत. शुभं वा यदि वा शुभं ॥ ते
 न संवर्द्धते राजा. सुकृते दुकृते रपि ॥ ॥ गुण जन लाइ लाया काममा. शुभ ग
 रिक न पनी. अशुभ गरिक न पनी. शुकृत ले पनी. दुकृत ले पनी. राजा को लक्ष्मी ह
 सि गली ॥ ७० ॥ ॥ यथा हेम परि क्षंते. ताप ताड न छेड नै ॥ तथा पुरुष मप्येव कुलः

श्री
 १३

शीलेन कर्मता ॥ ॥ जसौ स्मृ नपोति. कुटिका टिपरि क्षा गच्छ. ते सौ कुल ले. शील ले
 कर्म ले. पुरुष को परि क्षा गच्छ ॥ ७१ ॥ ॥ ज्ञात त्वं प्रक्षणे भूया. बंधवाद्य शना गमे ॥
 आपत्काले तथा मित्र. भार्या च विम वक्ष्ये ॥ ॥ सेव कहित हेनु कां मलाइ कन. दाऊ भा
 इहीत हेनु विपत्तिमा. मित्र हीत हेनु आपदामा. स्त्री हीत हेनु धन हि ज्ञापछि ॥ ७२ ॥ ॥
 भूया बहु विधा राज नु उन्नमा धन मधामा ॥ ते नियो ग्या यथा यो ज्ञा. त्रिविधे स्त्रेव कर्मः
 स्तु ॥ ॥ सेव कउन्नम. अधम. मध्यम. तीन प्रकार को र हेछ. काम पनी. उन्नमा. मध्यमा.
 अधमा. तीन प्रकार को र हेछौ. मानी सहे ही काम लाउनु ॥ ७३ ॥ ॥ आलस्य मूर्खलीकू

तत्तुष्टं शनिर्नसथ ॥ असंतुष्टममकंच तेजेरभत्यनराधिपः ॥ अतशी क्रोधि
 व्यसनी कुमार्गि ठग असंतोषी भक्तिनभयाको हस्तासेवक लाइ राजा लेछो ५ नु
 ॥ ७४ ॥ ॥ न्यजेस्वामी नमंत्युगं मत्युगं कृपनं त्यजेत् ॥ कृपनादविशेषज्ञो
 स्माच कृपनाशनं ॥ वहुतेरिहा राजाको सेवा नगर्नु रिहा हानभया पनी क
 पनी भया कार्यको निको ननिको नजा न्या भया तेको पनी ले वारोंग नु अ
 विवेकी जाको कार्य सिद्धि दुंदैत ॥ ७५ ॥ ॥ वामाभार्या सुतो मूर्ख प्रेछको वा
 ग्विवाला कः ॥ निस्ते हो व पुवर्मथ तेजे दस्य मह सुविं ॥ अहीन स्त्री मूर्ख

श्री
 १४

कोपनी व्यर्थ छ ॥ ७६ ॥ ॥ दारिद्र्याधिदुःखान वन्धने व्यशनानि च ॥ अदातु फलैतानि
 तस्मादानविशिष्यति ॥ पूर्वजन्मसादाननगत्याकाफलले इहजन्मसा दारिद्र्यं
 छ वंधनपाउं छ रोगी दुख तस्काराले दानधर्मगर्नुवाहिं छ ॥ ७७ ॥ ॥ पुलकाइवः
 धान्यषु पुत्र्यंदाइवजंतुषु ॥ तादृशस्तेमनुष्यषु येवधर्मवहिकृता ॥ धर्मम
 हारतिनभयाको मनुष्यकस्तो दुं छ भन्या धानका पुतलो जस्तो खला कागगता ज
 स्तो दुं छ ॥ तस्काराले दानधर्मगर्नुवाहिं छ ॥ ७८ ॥ ॥ तेजे दुर्जन संसर्ग भजसा
 पुसमागमे ॥ कुरुपुण्यमहोरात्र स्मरनित्यं मनित्यतां ॥ यो अधीरससारहो भ

नीजाली दुर्जन को संग छाडुनु माधुजन को संग गर्नु ॥ तदिने धर्म गर्नु ॥ १०० ॥
 इति श्री बान केसर संग्रहे प्रथम शतक समाप्तम् ॥ १॥ ॥ शास्त्रार्थ वक्षुषा वि
 क्षार नरेन्द्रानिति वक्षुषा ॥ वेदार्थ वक्षुषा विप्र ॥ इतराश्च वक्षुषा ॥ ॥ ज्ञानी
 जन को आषा शास्त्र हो राजा को आषा निति हो ब्राह्मण को आषा वेद हो इतर ज
 न को आषा चार विवा हो ॥ १॥ ॥ राज्ञी धर्म नि धर्मि ह्य पापे पापा समाग मे ॥ रा
 जानं मनु वर्ते ते ॥ यथा राजा तथा प्रजा ॥ ॥ राजा धर्मी साभया प्रजापती ध
 र्मी साहु छ राजा पापि भया प्रजापती पापि हुँ छ तस्का रण हो राजा भलो हु

श्री
 १८

नो वा हिंछ ॥ २॥ ॥ उद्यम साहस धैर्य वल बुद्धि परक्रम ॥ एते ते यत्र तिष्ठन्ति तत्र देवो
 पिसंकिन्त ॥ ॥ उद्यम आहु वल बुद्धि परक्रम धैर्य वल यत्रि छ ठीक गुण हुन्या
 मनुष्य देखता देवतापनी दरा उँछ ॥ ३॥ ॥ सा न्यदाने न मे डेन क्रमेन व वलेन व
 सर्व वस्तु महाशत्रु घाटनी यो न राधिपे ॥ ॥ मरुफारिदिन्या हृपका उन्या वल ले
 लन्या लोभ देवा उन्या यो वार शत्रु लोई राजा लेने शत्रु ॥ ४॥ ॥ पात्रे त्यागी गु
 लोरागी भोगे परिजने शत्रु ॥ ॥ दोधार तो यो धा नृपत्यं पंचल क्षत्रां ॥
 सुपात्र रीत्या गमन्या गु

लेबोधद्व्या. रतामहाश्वरे
 प्रणिपातेन. श्रुतेभेदेनियोज
 मपुत्रैर्हंलार्नमस्कारगरिहातलिनु. भेडगरिकन. श्रुतेकनहातलिनु
 धनदीकनहातलिनु. पराक्रमीलाइ. पराक्रमगरीहातलिनु॥६॥ ॥ आत्महि
 परेदशात. द्विद्याछिद्रं परस्पर॥ गृहेत्कर्मस्वांगति. परभावंवलक्षये॥ ॥ आ
 पुदोषपरालाइदेखाउनुछैन. परायंदोषजात्याकोगुप्तगरीराखनु. कोनैतनयमा
 आकुमाथिआइलाग्या. सबैप्रकाशगरिदिनु॥७॥ ॥ मनसाधितयत्कार्य. वचसा

श्री
 २०

नप्रकाशये॥ मंत्रलक्षणागूढात्मा. कार्यसि
 कामभयापनी. मुखलेप्रकाशनगर्नु. मंत्रजलागुप्तगयाको. कार्यसिद्धि॥८॥ ॥
 उपकारगृहीतेनशत्रुनांशत्रुमुद्धरेत्॥ पादलग्नकरस्थेन. कराकेनैवकराकं॥ ॥
 शत्रुकाहातवाट. आकुंकांमसिद्धिद्व्याभया. शत्रुहृतपनीकामलायेर. आशुका
 र्यसाधनु. कशोभन्या. जस्तैविद्याकोकांछो. कांछालेभिकनुतेसैहो॥९॥ ॥
 वहेभिन्नस्केधेन. यावत्कालंविबर्जयेत्॥ तथैवमागतेकाले. भिद्यात्यटमिवास
 मति॥ ॥ आकुदाउषस्यामहा. शत्रुलाइकोरुचहाइराखनु. जसैआकुदाउसेप्र

२२

छ. तत्तौ भरिवातिका गात्रो. दुंगा मा पछाई जै. कों उ चहाई राख्या का. शत्रु लाइ पछाई ॥
 १०॥ ॥ हे जिहू कटुक त्वेह. मधुरं किं न भाष्यसे. ॥ मधुरं वंदक ल्या ति. लोकोयं मधुरं पि
 ये. ॥ ॥ हे जिहू पिरो वचन न बोल्. मिहो वचन बोल्. मिहो वचन बोल्या देखी. सब
 लोक सुसी हुंछ. सबै लोपिया रोग दुंन ॥ ११॥ ॥ जिहू गे वसते लक्ष्मी. जिहू गे मि
 त्र बांधवा ॥ जिहू गे वन्धन स्यापि. जिहू गे मरणां कुवं. ॥ हे जिहू. जिहू का दुपामा
 लक्ष्मी वासहुंछ. जिहू का दुपामा. इह मित्र हुंछ. जिहू का दुपामा वन्धन परिछ. जि
 हू का दुपोमा जीव जांछ. तत्कारण ले सहाय ॥ ॥ प्रिये वाक्य प्रदानेन. स

वेतुष्यंति जंतवः ॥ तस्मान्न देव जातव्यं. किं वाक्य पिद रिडता ॥ ॥ पियारो वचन बोल्या दे
 विदे. सबै लोक सुसी हुंछ. सकल कार्य सिद्धि हुंछ. तत्कारण ले वचन कोद रिडन हु
 नु ॥ १३॥ ॥ अग्निदोगरद श्रैव. शत्रु पाति धनापहा ॥ शत्रु दारा पहारी व. अहुते आत
 ताइन ॥ ॥ पराया का घर मा आगो लाउन्या. हति यार बाधी आइ पन्या. धन हरिलिन्या. वे
 ती हर्न आउन्या. विषय वाडन्या. पराया को ज्युलिन्या. एति छ हो कलाड. आन भ
 नुं ॥ १४॥ ॥ आतताइन मायां ते सप्रिवेदां त पारंगं ॥ जिहू गो सं
 हा भवेत् ॥ ॥ आतताइन भय पछि. वतुर्वेद निपूणा हुन्या ब्राह्म

वृक्षहत्यापापलादेन ॥ १५ ॥ ॥ तादृङ्कालायतेनित्यं सत्यधर्मपात्रम्
 निःपतिधर्मेनपालयत् ॥ ॥ राजालैराज्यगर्नु धर्मेले सत्यले पु
 नाजित्नु तवराज्यद्विष्ट ॥ १६ ॥ ॥ पुष्पं पुष्पविचित्रीया मलेष्टे दोन
 रइवांगीति यथाराजातिमारतां ॥ ॥ राजाकोर मालिनीको एकैवागेगनु पु
 फूटिपनु रुषनकाटनु तेलेराजाले डंडगनु ॥ १७ ॥ ॥ अहीनित्रमुदासीनं म
 विरोगुरु ॥ योनवुद्यतिमंदात्मा सचसर्वत्रनश्यति ॥ ॥ जोमनुष्यमुखिआभैकन यो
 शत्रु योनित्र योमध्यम मनीजीदेन तेस्कोसवैकार्य नाशहुंछ ॥ १८ ॥ ॥ अनायक्य

शिखरारूढं सत्यं वज्रेणापाति ॥ ॥ बहुते संपतिभयापदि यश्चाभं नाकादरहुंछ करो
 भन्या उच्चपर्वतकन वज्रलेखसलीदिंछ तेलेधनकोनाशहुंछ ॥ १९ ॥ ॥ कोभक्षोभ
 क्षकोनित्यं कोसुखानिचरोगिनां ॥ यस्य भार्या त्वसंतुष्टा कोचतस्योत्सवंगुहेत् ॥
 सर्वभक्षीकन अभक्ष कोहोछ सदरोगीकन सुखकाहाछ जस्का जोइ असंतोषीछ
 उस्कोघरमाकाहाआनंदछ ॥ २० ॥ ॥ सौमिक्षकर्वकोनित्यं सुखनित्यं मरोगिनां ॥
 भार्याभर्तुवसायस्य तस्यनित्योत्सवंगुहे ॥ ॥ संचयगर्णीजनको दुर्भिक्षहुं देनः
 मुखवार्त्तारोगिको दुःखहुं देन जका जोइ यस्मकावस्य छ उस्का घरमा सदाआनंदः

ॐ ॥४८॥ ॥सर्वपरं वसंदुःखं सर्वमात्मा वसंतुखं॥ एतद्विद्या समासेन लक्षणां सुखदुः
 खयो ॥ ॥सर्वभंडावरोदुःखं परकावश्यभैरहनु दाज्यभाइ इष्टमित्रसर्वे आक्रावत्य
 भयावडो सुखयो दुःखसुखदुःखकालक्षणाहुन् ॥४९॥ ॥सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःख
 स्यान्तरं सुखं ॥ सुखदुःखमनुष्यानां चक्रवत्यरिवर्तते ॥ ॥सुखकापछि दुःख आ
 डंछ दुःखकापछि सुख आडंछ मनुष्यलाई सुखदुःखचक्रजै फिरे ॥५०॥ ॥वहु
 भि मूर्खसंघाटे रोगाल्यै पशुवृत्तिभि ॥ छाड्यति गुणा सर्वा न मे दोरी वदिवाकर ॥
 मूर्खसर्वे वाटु लोभया काथाडं मा गुणी जनको शोभाहुं दैन कशोभन्या श्रीसूर्यला

श्री

१८

श्री
२८

ई वाडलले छोप्नाजै छोप्छन् ॥५१॥ ॥असता सहसंगेता कोतायांति धमागातः ॥ पयोः
 पिसौ डिनी हेसै मद्यमित्यं विधीयते ॥ ॥असर्जनको संग गज्यापछि अटोमतिहुं कशोभ
 न्या सुधिनी काहात वाट दुदपियापनी मदपियो भंछ नेसै ॥५२॥ ॥असत्पक्ष दोषेता
 अधमाया तिसाधव ॥ मार्गे वृत्तिमिरस्य क्लेशोपि विस जायते ॥ ॥असर्जनको संग गज
 यापछि सर्जनपनी असर्जनहुं कशोभन्या अध्या समहा शोजोवाठोपनी टेढो लाग
 छन् ॥५३॥ ॥उतमै सहसंगेता कोतायांति समुनति ॥ मूर्धातृणा निधार्यते गुंथिते
 कुसुमै सहः ॥ ॥भलाको संग गज्यापछि नीचपनी उन्नमहुं कशोभन्या फूलसितयां

२९

सउनीछन उपनी कपालमारहंछन तेसै ॥ ५४ ॥ ॥ किंकरिष्यतिसंपर्क स्वभावोदुरतिक
 मः ॥ पश्यान्फलमध्यस्थो कषायोनाम्लतांगति ॥ ॥ संगतभलोपायोरकागर्भ स्व
 भावनछोद्या स्वभावछोडनुगाहो कशोभन्या ओं पभित्रको कोइलोतरैछ अमिलोहुंदे
 न तेसै ॥ ५५ ॥ ॥ शर्करावसुबंधेन मध्यनिम्बप्रतिष्ठित ॥ मधुक्षीरसमावृष्टि निम्ब
 किंमधुगयते ॥ ॥ सरंभानिम्बरोपनु तस्मादिति दुदमहलेसिचनु तेपनी निम्बः
 तिताकोटिटे गुहिशोहुंदेन स्वभावकेनुगाहोछ ॥ ५६ ॥ ॥ पुष्टकेषु च या त्रिधा प
 रहस्तेषु योधनं ॥ कार्यकालेन संप्राप्ते न सा विद्या न तंधनं ॥ ॥ पुष्टकमहाकोविद्या

४३

श्री
२२

पश्याहातको धन आक्रागर्जमापा भिंदेन त्यो विद्याले विद्या होइन न त्याधनले धन हो
 इन ॥ ५७ ॥ ॥ दूरस्थानि च मित्राणि नित्तेहानि च बांधवा ॥ किंप्रयोजन कर्तव्या मर्षि
 तो नित्फलानि च ॥ ॥ टाढाका मित्र स्नेहनभयाको दज्जु भाई आक्राकार्यमापाउंदे
 न तीभयालेका प्रयोजनछ ॥ ५८ ॥ ॥ अतद्याद्रूपपुष्पाणि दूरस्थापि हि बांधवाः ॥
 कान्तेचाले व्यरूपश्च यः कालेनो प्रतिष्ठिति ॥ ॥ वनमहाको फलफूल टाढाका दज्जु
 भाई आक्राकार्यमापाउंदे भिन्नामाहाले व्यको चित्रकार जस्तो हो ॥ ५९ ॥ ॥ प्रज्ञावचन
 हीनस्य कर्महीनस्तु यो नर ॥ निर्वाचितना तस्य भ्रमं न्याकुतयो यथा ॥ ६० ॥ ॥

मूर्खले बोला को वचन न जां त्या ले ग जा को म र रा ता मा धु हो म दिया जस्तो हो ॥ ६० ॥
 का ग यु धं अ पि श्रा धं प म्य त्यो क ल ह स्त था ॥ च त्वा रो नि स्फ ला यां ति प्र भा ते मे घ द म्बर
 ॥ ॥ बो का को जु ध अ पि श्व र को श्रा ध जो इ पो इ को र या ल बा हों न को मे घ यो चार नि
 स्फल छ ॥ ६१ ॥ ॥ नि स्फ ला कृ प नी से वा नि स्फ ला र ति वा तु ले ॥ दो ष सं यु क्त शी ल स्य
 श्र ति वि प्र स्य नि स्फ ला ॥ ॥ कृ प नी को से वा रोगी को र ती सं भोग दो ष बा ल ता को वि
 शा यो स वे नि स्फ ल छ ॥ ६२ ॥ ॥ व र ये कु ल यां प्रा ज वि रू पा म पि क न्य का ॥ रूप
 स्त्री नी न नी च स्य वे वा ह्यं स द शै कु ले ॥ ॥ ज्ञा नी जन ले क रू पी भ या प नी आ पु स मा

श्री
 ३०

न की छो री वि वा ह गर्नु रा छी छ त प नी नी च को छो री वि वा ह न गर्नु ॥ ६३ ॥ ॥ वि वा द यं
 म तं ग्रा ह्यं म मे धा द पि कां च तां ॥ नी वा द पु त्र मा वि शा स्त्री र त्वे दु कु ला द पि ॥ ॥ वि ष मा
 छ त प नी अ म त भ या कि की लि नु आ पु वि त्र मा छ त प नी सून पा या लि नु नी च छ त प
 नी उ त्र म वि शा पा या शि क नु स्त्री र त्वे पा या कु ल ही न की छो री छ त प नी लि नु जो
 ग्य छ ॥ ६४ ॥ ॥ के स्य दो षं कु ले ना स्ति वा धि नां को ता पी डित ॥ के ने ह व्य स नं प्रा ते
 श्रि य क स्य नि रं त रं ॥ ॥ क र्का कु ल मा दो ष छे न रोग ले क श्चा इ पी डा भ य नो क श्चा
 इ इ र व प दै न क र्का च र मा स दा ल क्ष्मी स्थि र भ या को छ ॥ ६५ ॥ ॥ दो षो प ति गु णो

पतिः निर्गुणोऽपि जायते ॥ सुकुमारोऽस्य पद्मस्य नालो भवति कर्कशः ॥ ॥ स वै कः दोषः
 नीकुंछः गुणपनि कुंछः कः शोभत्याः एतिसुंदरकोमलः कमलकाकुलकोऽङ्गो कलो यश्च दुः
 छः तेस्ते अलीके गुणपः अगुणपनीः स वै कः कुंछः ॥ ६६ ॥ ॥ अमृतं शिशिरे वंदिः अमृतं
 कीरभोजनं ॥ अमृतं गुणवती भार्या अमृतं बालभाषितं ॥ ॥ जाडो मा आगो अमृतः दुः
 दपि दुःखे अमृतः गुणवती अस्त्री अमृतः बालवत्सलः को वचन अमृतः ॥ ६७ ॥ ॥
 दुर्लभा प्राकृति कीर्ती दुर्लभस्तु समीप भु ॥ दुर्लभं वसु हं नारी दुर्लभं वचनं प्रिये ॥ ॥
 संस्कृतवाणि दुर्लभः समावतं तस्मात् दुर्लभः सुचारि वस्त्री दुर्लभः प्रियवचन दुर्लभः एतिव

श्री
 ३१

दो भाग्यले मिले ॥ ६८ ॥ ॥ नदीनां जां हवीं श्रेष्ठा नारीनां वपतिवृता ॥ मनुष्यानां नृपो प्रादुः
 देशानां यत्र निवृति ॥ ॥ नदीनध्यगंगा श्रेष्ठः अस्त्रीमध्यपतिवृता श्रेष्ठः मनुष्यमध्यराजाः
 श्रेष्ठः देशमध्यः अपुवस्याको देशः श्रेष्ठः ॥ ६९ ॥ ॥ पुत्रपौत्रसमा कीर्ती दासिदाससभा
 कुले ॥ भार्या विरहितं पुंसं यथारण्यतथा गृहं ॥ ॥ कोरातातिदूतपनीः कमाराकमारीः
 रेरेदूतपनीः धनधान्यप्रसक्तदूतपनीः जो इन भयाको घर वनै जस्तो हो ॥ ७० ॥ ॥
 सर्वेषां मे वरत्नानां स्त्रियो रत्नमनुत्तमं ॥ तस्मात्तदर्थं नीचेया नाश्च तेऽन्नाधनेन किं ॥ ॥
 सर्वैरत्नभंडाः स्त्रीरत्नदूलोः तसर्थं जो इन भयाः धनका प्रयोजन छ ॥ ७१ ॥ ॥ कुस्त्री हंति

कुटुंबाणि. कुपुत्रो हं न्यते कुलं ॥ कुमंत्रौ हं न्यते राजा. रास्त्रवौ रे न हं न्यते ॥ ॥ कुअस्त्रीले कुटु
 वको नाशगर्हन्. कुपुत्रले कुलको नाशगर्हन्. वोरले राजको नाशगर्हन्. कुमंत्रीले रा
 जाको नाशगर्हन् ॥ ७२ ॥ ॥ स्त्रीणां दोषसहश्राणि. गुणात्रिणी महीपते ॥ गृहाचार सु
 तोत्पत्ति. मरतो पतिनाशह ॥ ॥ स्वास्त्रीछे उह जार दोष छ. गुणातीन छ. क्या २ भन्या ॥
 घरको संभार गर्नु. छोरो जन्मा इदिनु. स्वामी संग सती जानु ॥ ७३ ॥ ॥ कवये किन्नपत्न्यं
 ति. किं न भक्षति वायसात् ॥ प्रमादा किं न कुर्वति. किं न जल्पति मयपा ॥ ॥ कवीरह
 रले न देखा को काछ. को कले न घाया को काछ. स्वास्त्री हरले क्या योग दैन. जांडला गर

श्री
 ३२

न्यामानि सले क्या पो भंदैन ॥ ७४ ॥ ॥ पुत्रप्रयोजनं भार्या. पुत्रापि राउ प्रयोजनं ॥ हीत प्रः
 योजनं मित्रं. सर्वमात्मप्रयोजनं ॥ ॥ छोरा कानि मित्रले. अस्त्री विवाह गर्नु. पिता देला
 भनी छोरो जन्मा उनु. हीत कानि मित्रले. मित्रला उनु. सबै कार्य कानि मित्रले. आफु
 मूरखा गर्नु ॥ ७५ ॥ ॥ समुद्रावरणा भूमी. प्राकारावरणा गृहा ॥ नरेन्द्रावरणा दे
 शा. श्वरित्रावरणा स्त्रियः ॥ ॥ समुद्र काये रालेशोभित. पृथ्वी. मित्रा काये रालेशोभि
 त घर. राजा काये रालेशोभित. राज्य. चरित्र काये रालेशोभि. अस्त्री ॥ ७६ ॥ ॥ न गृहा
 नी न वांशानी. न प्राकार न रक्षकाः ॥ न बंधो नैव बन्धो वा. स्वशीला च कुलस्त्रियः ॥ ॥

श्री

३३
 ३३

घरको वास ले पनी. अने कपू काराग ले रक्षा हुंदैन. शील ले रक्षा हुंदै. विना कुल को चे
 लीन वाधि. रक्षा हुंदैन. ॥ ११ ॥ ॥ नदी पातय ते तीरं. नारी पातय ते कुलं. नारी नांच
 नदी नांच. स्वच्छंद ललितं गतिः ॥ ॥ नदी ले तीर विगाछ. अस्त्री ले कुल विगाछ. न
 दीर अस्त्री स्वच्छंद गति का हुन्छ ॥ १२ ॥ ॥ लता पाश्वे स्थितं वृक्ष. भत्या पाश्वे स्थिः
 तं नृपः ॥ पार्श्वस्थ पुरुषं यो विदुः पश्यंति न संशयः ॥ ॥ लहा ले मुख्या जीः
 को रुष वेष्ट. राजा ले मुख्या जी को. सेवक पियारो गर्छ. स्वास्त्री ले. मुख्या जी को
 पुरुष पोइ गर्छ. एति ठो क संशय चाहिंदैन ॥ १३ ॥ ॥ नैव पश्यति जातौ धः

श्री
 ३३

कामाधो नैव पश्यति ॥ न पश्यति मदीन नृ. अर्थि दोषो न पश्यति ॥ ॥ जन्मदादेः
 मीकानुले केही देखैन. कामाधुर ले भलो मंदो देखैन. अहंकारी ले पनी देखैन. धना
 ध्य ले दोष देखैन ॥ १४ ॥ ॥ जीर्ण मन्त्र प्रपश्यति. भाषा च गत यौवनं ॥ राग प्रत्या
 गतं शूरं. शस्य च गृहमागतः ॥ ॥ पचाइ क न ब्रह्मा को. अन्न निको. जौवन ब्रह्मा
 की अस्त्री निको. लडाइ माजिती क न आउया. सिपाहि निको. बाली घरमा पस्या पछि
 निको ॥ १५ ॥ ॥ लक्ष्मी लक्षणा हीने च. कुल हीने सरस्वती ॥ अपात्र रमते नारी. गि
 रौ वर्यति वासवः ॥ ॥ अलसीनी का घरमा बस्या की लक्ष्मी. नीच का घरमा बस्या

लो

कीसर स्वती. कुपात्र संग प्रसंग गगन्या अस्ती. पर्वत माथि कोवर्षी. यो चार अर्थ छु ॥ ८२ ॥
 यस्य भार्या विरूपाक्षी. कस्मली कलहः प्रिये ॥ उत्तरोत्तर वादी च. सा जरा न जरा जरा ॥ ८३ ॥
 जस्का जो इ विरूपी. अशुची. कलह रुचा उन्मा. स्वामी संग उत्तरोत्तर गरी कामन्या. ते सौ स्वा
 स्ती लाइ जरा भंनु. जरा लाइ जरा न भंनु ॥ ८४ ॥ ॥ यस्य भार्या स्वरूपा च. भर्तार मनुगाः
 मिनी ॥ नित्यं मधुर भाषी च. सा श्रिया न श्रिया श्रिया ॥ ॥ जस्का जो इरा घी छ. रव सम का
 वस्य छ. सधै मधुर वचन बोले छ. ते सौ स्वास्ती लाइ. लक्ष्मी भंनु ॥ ८५ ॥ ॥ यस्य भार्या गृहे
 नित्यं. सुनिन्द्य परिगर्जति ॥ तस्य सिदंति गात्राणि. पद्मनी वहि मागने ॥ ॥ जस्का जो इ

श्री
 ३४

ले. नित्य कुर भुक्ता जै गर्ज छ. ते स्को शरीर दिन शुक्ल छ. कशो भन्या. तु सा र ले पीया को क
 मल सुक्ता जस्तो हुं छ ॥ ८५ ॥ ॥ यस्य गृहे सुभार्या च. मातै वहित कारिणी ॥ वर्द्धते तस्य
 गात्राणि. शुक्ल पक्षे यथा शशी ॥ ॥ सहतारी ले हीत गया जहि. जो ई ले हीत गर्छन. ते
 स्को शरीर. शुक्ल रसका चन्द्रमा वृद्धि हुं दाजै. शरीर वृद्धि मान हुं छ ॥ ८६ ॥ ॥ किं जातै वहु
 भी पुत्रै. शोक संताप कारकै ॥ वर मै कं कुलालं वी. यत्र विश्रम ते कुलं ॥ ॥ सता उन्मा छो
 रो वहुत भयो र का गर्नु. कुल को सप्रत भया. एकै छत पनी ठेर छन ॥ ८७ ॥ ॥ एक भा
 र्या त्रयं पुत्रा. द्वे हलोद शधेन व ॥ कन्या काला वसाने पि. न ते या स्पति विक्रियां ॥ ॥

४

केहेवनी

एकगोटी जोइ तीनगोटी छोरो दुइजोर हल दशगोटि दुहुनी गाई पछिवाट एकगोटि छोरी
एतिसंजुक्तभया दुःखपदेन ॥ ८८ ॥ ॥ एहव्यावहवः पुत्रा गयामेको यदि बुजेत ॥ य
ज्ञतव्यास्वमेधेन निलंबावसमुत्सजेत ॥ ॥ जस्को रेहै छोरा भयामा एकछोरा गया
जाई पिण्ड दिया तेसूलाइ अस्वमेध जज्ञगया को पुण्य नीलोहास भले उत्सव गया
को पुण्य पाउछ ॥ ८९ ॥ ॥ एकेना शुक्ल वृक्षेन दह्यमानेन वहिना ॥ दह्यते तदनं
सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ॥ ॥ वनमहा एकगोटा शुक्ला कोरुषमा आगोला गदास
वैवनदछ छन तेसो कुपुत्रले कुलको नाशगछन ॥ ९० ॥ ॥ एकेनापि सुवृक्षा

श्री
३५

वासीत ॥ ९१ ॥

पुष्यतेन सुगंधिना ॥ वासितं तदनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥ ॥ वनमहा एकगोटा
सुजाती रुषमा फूलफुल्यो वनभरी सुवास आउछ तेसो सुपुत्रले कुलको उधार ग
छन ॥ ९१ ॥ ॥ यस्य पुत्रा वसाभत्या भार्या दुंदानुगामिनी ॥ विभवेष्टपिसंतुष्ट स्व
र्गतस्य महीतले ॥ ॥ जस्को छोरा कमारा कमारी जोई आक्कावस्यमाछ धनपनी छन
तेस्को स्वर्ग आहिछो ॥ ९२ ॥ ॥ ये पुत्रास्ते पितुर्वत्या स पितापसुपोषकः ॥ तन्मित्रं
यत्र विश्वासं साभार्या यत्र निवृत्तिः ॥ ॥ जो वावुकावस्यछ उछोरो बालन्या पोसुन्याक
नवावाभंनु जो विश्वास गय्या को रहंछ तो मित्र हो जो आक्कावस्यछ तो जोशी ॥ ९३ ॥

सफल

यस्य जीवति जीवती. विप्रामित्रश्रवांधवा ॥ सफलं जीवितं तस्य. आत्मा र्थं को न जीवती ॥ ॥
 जस्का जिउनी माहा. ब्राह्मणकनमित्रलाइछ. दाउपूभाइ जिउनुछ. त्यो जिउनु सफल हो ॥
 २४ ॥ ॥ स जीवति गुणायस्य. यस्य धर्मस जीवति ॥ गुणधर्मविहीनस्य. निस्फलं तस्य जी
 वितं ॥ ॥ जस्मनुष्यको गुणपनी जाग्या कोछ. धर्मपनी जाग्या कोछ. त्यो जीया कोछ भन्नु
 जस्को गुणपनी छैन. धर्मपनी छैन. त्यो जिउनु निस्फल छ ॥ २५ ॥ ॥ वाचा सरस्वती य
 स्य. भार्यारूपवती सती ॥ लक्ष्मी त्यागवती यस्य. सफलं तस्य जीवितं ॥ ॥ जस्का वचन श्री
 मा सरस्वती छ. अस्त्रीरूपवती सती छ. दानगर्ना समर्थको. लक्ष्मी छन्. त्यो जिउनु सफल छ ॥ २६

॥ २६ ॥ ॥ धर्मार्थकाममोक्षानां. यस्य कोपिन विद्यते ॥ अजागरत्वरत्वेपि. निरर्थतस्य जी
 वितं ॥ ॥ जस्का जिउनी माहा. धर्म अर्थ. काम मोक्ष. यो चार पदार्थमा. एकै न तुल्याउन् या
 मनुष्य. जन्मलिया को व्यर्थ छ भन्नु ॥ २७ ॥ ॥ धर्मसत्यविहीनस्य. दिनं यांति विविक्त्रियां
 ॥ सलोहकारवस्तस्य. स्वयं वैव प्रजीयते ॥ ॥ जस्मनुष्यको. धर्मसत्य छैन. तेस्को दिन
 व्यर्थ गुवायो. कशोभत्या. फलाम्पाभाडो. बिहिंदा जै जाँछ ॥ २८ ॥ ॥ शत्रोरपि गुणा वाचाः
 दोषा वाचा गुरोरपि. युक्ता युक्तं च वा ग्राह्यं. न वचो गुरुगौरवा ॥ ॥ गुणको कुरा. श
 त्रु छतपनी गर्नु. दोषको कुरो. गुरु छतपनी गर्नु. जथा जोश को कुरो मा. गुरु छतपनी भन्नु

॥२६॥ ॥ अकर्तृव्यं न कर्तृव्यं ॥ तौ कर्तृकं गच्छेत् ॥ कर्तृव्यं मेव कर्तृव्यं ॥ प्राणी कर्तृकं गच्छेत्
 रपि ॥ ॥ कु कर्मकां मप्राणा दुःखापनी नगर्नु ॥ शु कर्मकां मप्राणा दुःखपनी नगर्नु ॥ १०० ॥
 इति श्रीमानके सारसंग्रहे द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ ॥ काले वारि पुना संधि ॥ काले च
 मित्र विग्रहे ॥ कार्यकारणमाश्रय ॥ कालं क्षेपति परिहृतः ॥ ॥ वेला हेरी शत्रु सित मि
 लनु ॥ वेला हेरी मित्र सित पत्नी विरोध गनु ॥ कार्य को हेतु ॥ ज्ञानी जन ले समय का दूकर
 ॥ १ ॥ ॥ काले पचति भूतानि ॥ काले सहरते प्रजा ॥ काले सुप्तेषु जागर्ति ॥ कालो हि दुर्गति
 क्रमः ॥ ॥ काले ले प्राणि श्रुति गर्हन् ॥ काले ले प्रजा हरता गर्हन् ॥ सुत्थापनी काल जा

श्री
३७

गीर हंछ ॥ तत्कारणाले काल बडो छ ॥ २ ॥ ॥ कालात्पुशो हते बीजं ॥ फलं कालात्प्रवर्तते ॥ का
 लः प्रवर्धते शृङ्गि ॥ पुनः कालो पिसंहरेत् ॥ ॥ कालमा बीज छर्नु ॥ काले ले उग्रं छ ॥ काले
 ले फला उग्रं छ ॥ काले ले संहार गर्हन् ॥ ३ ॥ ॥ यदि शो भूमी रा पश्च ॥ चन्द्रा कर्म रः
 मारुतः ॥ सर्व सहरते काल ॥ तस्मात्कालो महोन्नतः ॥ ॥ आकाश ॥ दिशा ॥ भूमी ॥ जल ॥ चन्द्र ॥ स
 र्य ॥ अग्नि ॥ वायु ॥ यो सबै काले ले हरता गर्हन् ॥ तत्कारणाले काल बडो हो ॥ ४ ॥ ॥ किं करिष्य
 ति वक्ता च ॥ श्रोता यत्र न विद्यते ॥ न गच्छेत्पन कृपा मे ॥ रज कं किं करिष्यति ॥ ॥ कथा सु
 नु न जान्या को था उमा ॥ वता उमा ॥ पण्डित का प्रयोज छ ॥ कशो भन्या कर्म का दे शमा ॥ यो वि

कोकाकोमद॥५॥ ॥कदलीवनमधसु.वंहिमराउपराक्रमः॥ अविवेकीजनस्थाने.गुणावानर्कि
 करिष्यति॥ ॥केकावनमहा.जसैआग्निको.केहिपरात्रमलादेन.तेसैविवेकनभयाका
 थाउंसा.गुणीजनकोकेहीसीपलादेन॥६॥ ॥प्रलयेभिन्नमर्जादाभवती.किलसागरा॥
 सागराभेदमिच्छति.प्रलयेपिनसाधवः॥ ॥एतिगर्नु.एतिनगर्नुभन्याको.साधुजनकोहो
 मर्जादाभंनु.प्रलयकालमा.समुद्रलेपनी.मर्जादालंघनागर्हन्.साधुजनले.प्रलयकाल
 तपनी.मर्जादालंघनागर्हन्॥७॥ ॥मेरुश्चरतिकल्यांते.मर्जादासागरस्यच॥प्रतिपन्नमहास
 त्वा.नचरंतीकदाचनः॥ ॥प्रलयकालमा.सुमेरुपर्वतपनी.उगमागाउँछन्.सागरसमुद्रलेप

श्री
 ३८

श्रीमर्जादालंघनागर्हन्.साधुजनलेमात्र.दुःखसुखछतपनीकुमार्गचलदेन॥८॥ ॥विद्यतेस्त्री
 सुचपलो.विद्यतेब्राह्मणतप॥पातव्यंविद्यतेनीचे.दयासाधुसुविद्यते॥ ॥अस्त्रीछेउचंचलहुँछ
 ब्राह्मणछेउतपहुँछ.नीचछेउकुदयाहुँछ.साधुजनछेउदयाहुँछ॥९॥ ॥साधुसन्मानमात्रेण
 भवंतिदेहविक्रमः॥उपकारशतेनापिदुर्जनकेनगृह्यते॥ ॥साधुजनलाइ.हातजोरनीमात्रे
 आफ्नाहुँछ.दुर्जनलाईशयउपकारगयापनी.आफ्नाहुँदैन्॥१०॥ ॥बुधबोधातिशास्त्रानि
 नाबुधःशास्त्रबोधयत्॥प्रत्यक्षंचकृतेदीपे.चक्षुहीनोनपश्यति॥ ॥जानीजनलाईशास्त्र
 लेउमाउनोहुँछ.मूर्खलाईहुँदैन्.कशोभन्या.प्रत्यक्षवातिवाल्याको.अंधालेदेखेनन्.ते

सौहो ॥ ११॥ ॥ नारीकेलसमाकारा दृश्यंतिकेपिसर्जना ॥ अथपिवदलाकारा वहीरेवमनोरमाः ॥ ॥
 सर्जनभन्याकोवाहीरस्तश्री भिन्नमसिनोनरिवलजस्तो दुर्जनभन्याकोवाहीरास्तो भिन्नस्तश्रीवये
 रजस्तो ॥ १२॥ ॥ चंदनशीतलं चंदननेनतुचन्द्रमा ॥ चन्द्रचन्दनयोर्मध्य साधुसंपर्कशीतलं
 ॥ ॥ शीतलभन्याको श्रीस्वाशुशीतल चंद्रमाशीतल यो दुर्भंदा साधुजनकोसंगवस्तुशीतल
 हो ॥ १३॥ ॥ अधमाधनमिच्छति प्रीतिमिच्छति मध्यमा ॥ उत्तमा मानमिच्छति शान्तिमिच्छति
 साधवः ॥ ॥ अधमजनलेधनकोइच्छागर्ह मध्यमजनलेप्रीतिकोइच्छागर्ह उत्तमजनले मा
 नकोइच्छागर्ह न साधुजनलेशान्तिकोइच्छागर्ह ॥ १४॥ ॥ मद्धिकाव्रामिच्छति धनमि

श्री
 ३२

छतिपार्थिव ॥ नीचाकलहमिच्छति शान्तिमिच्छति साधवः ॥ ॥ भिंगालेखटितटाउकोइच्छागर्ह
 न राजालेधनकोइच्छागर्ह न नीचालेकलहकोइच्छागर्ह न साधुजनलेशान्तिकोइच्छागर्ह ॥ १५॥
 ॥ ॥ इतराश्वार्थमिच्छति रूपमिच्छति दारिका ॥ ज्ञातयेकुलमिच्छति स्वर्गमिच्छति तापसा ॥ ॥
 सवैलेधनकोइच्छागर्ह न कोटिहेतुलेरूपकोइच्छागर्ह न जोटिगोत्रहेतुले कुलवांछागर्ह न
 तपस्वीहेतुले स्वर्गवांछागर्ह न ॥ १६॥ ॥ अतीकेशेनयद्वयं अतिलोभेनयत्सुखी ॥ परपीडा
 चयावृत्ति नैवसाधुषुविद्यते ॥ ॥ वशकसलेधनकमाउनु लोभलेसुखगनु परपीडादिनु
 यत्तिथोक साधुजनछेउहुंदैन ॥ १७॥ ॥ नसक्यं नारभेत्प्राज्ञे अकार्यं नैव कारयेत् ॥ स्वल्पक

कार्यनकुर्ष्याच. निष्फलं नैव सेवयेत् ॥ ॥ सर्जनहेतुलेन सक्याको कार्यरंभ गदैर्न. लोभदेवा
 यापनीकु कर्मगदैर्न. नीचकामगदैर्न. निष्फलदुःखाथाउं मासेवागदैर्न ॥ १८ ॥ ॥ शैले शैले
 नमानिकां. मत्तिकं न गजे गजे ॥ साधवो न हि सर्वत्र. चन्दने न वने वने ॥ ॥ सवै पर्वतमा ॥
 माणिक्यं दुन्दैर्न. सवै सती कामस्तकमामोति दुन्दैर्न. सवै थाउं मासाधुजन दुन्दैर्न. सवै वनमाः
 श्रीराउ दुन्दैर्न ॥ १९ ॥ ॥ परकार्येषु युक्तात्मा. स्वकार्ये क्षिप्रसाधयेत् ॥ सुहृत्कार्ये
 धुनिवृत्ति. राजकार्येषु विक्रमः ॥ ॥ वत्साकार्यमाजु क्लिताउनु. आप्ताकार्यस्वरक्षु सि
 द्विगर्नु. मित्रको कार्य निश्चयगर्नु. राजाको कार्यमावललाउनु. यस्तो कामसाधुजनको ही

श्री
 ४०

॥ २० ॥ ॥ जललेखे च नीचानां. यत्कृतं तं न दृश्यते ॥ अचलं मपि साधुनां. शिलालेखेवति
 कृति ॥ ॥ नीचजनलाइ. कटिउपकारगयापनी. देखे नर. पाणिमा. पानीले. लेख्याजः
 स्तो. साधुजनलाइ. एकवेर उपकारगया. रुंगोमालेख्याजस्तो. जन्मजमे टिंदैर्न ॥ २१ ॥ ॥
 महतामापदः सती. महतामेव संपदः ॥ इतरेवमनुष्येषु. नापदो नैव सम्पदः ॥ ॥ वडापु
 रुषलाइ. सुखपनीरेरे. दुःखपनीरेरे ॥ अरुचिचामनुष्यलाइ. सुखपनीठोरो. दुःखप
 नीठोरो ॥ २२ ॥ ॥ शम्भुसुख्यति अर्केन. वस्त्रशेखेन चन्द्रमा ॥ विलुप्तरा मात्रेण. मह
 ताकरसंयुते ॥ ॥ ओं कको फलपूलचद्रया. श्रीमहादेवसंतुष्टु हृदयं वस्त्रचद्रया चंद्रमा

संतुष्टुं हं मनलेमात्रसुमरणाग्या श्रीविलुप्ततस्तुष्टु वडापुस्तकताईहातजोरनैमात्रै संतुष्टुं हं
 ॥२३॥ ॥लेखकपाठकश्चैव यो चांत्यशास्त्रसिंतका॥ सर्वव्यसनिनो मूढा क्रियावंतश्चपंडि
 तः॥ ॥लेखनापहनापंडितको अभ्यासमात्रेण याकोछ कोमबुद्धदेन व्यसनीभंनु कुराको
 अगारैकुरौबुद्ध्या कोमकोअगारैकोमबुद्ध्या शोपंडितभंनु॥२४॥ ॥वौहित्यमश्ववारि
 को राजसेवातपोवनं॥ धीराश्चत्वारिकुर्वती कातराक्षवाहका॥ ॥हितमोहिकोव्यापार
 घोडाकोव्यापार राजाकोतपोवनतपस्या चारकोमज्ञानीजनलेगर्नाहुन् काठरजनलेघे
 टिगर्नु॥२५॥ ॥ब्रजेक्षनार्थिवातिज्यंतिग्रार्थीचवहुश्रुतं॥ अतुकालेनपत्यार्थिमा

श्री
 ४९

नार्थिनपतिंब्रजेत्॥ ॥धनकोइछागर्न्यालेव्यापारगर्नु विद्याकोइछागर्न्याले वहुतैकाशास्त्र
 माअभ्यासगर्नु छोराकोइछागर्न्याले अतुकालमासंभोगगर्नु मानकोइछागर्न्याले राजाको
 सेवागर्नु॥२६॥ ॥मुखपद्मदलाकारं वाचाचन्दनशीतलं॥ हृदयकर्तृसंयुक्तं त्रिविधंधू
 र्तलक्षणां॥ ॥कमलकाफूलजस्तोमुखउज्यालोहुंछ वचनश्रीखण्डजस्तोशीतलहुंछ हृ
 दयकर्तृनाजस्तोहुंछ तेस्तालक्षणाकोधूर्तभंनु॥२७॥ ॥दुर्जनप्रियवादीच नैवविश्वा
 सकारकं॥ मधुश्रवतिजिह्वाग्रे हृदिहलाहलं विषं॥ ॥जिभ्रामागुलियोहुंछ पिया
 रोवचनवोल्छे विश्वासहुंछे देन हृदयेमाविषहुंछ रेस्तालक्षणाको दुर्जनभंनु॥२८॥ ॥

खलं सर्षपमात्राणि परद्धि जातिपश्यति ॥ आत्मनो विल्वमात्राणि पश्यते पितृपश्यती ॥ ॥
 दुर्जनभन्याको अहोको भन्या रायाजने ॥ रायाको देखुन आफको भन्या बेलजत्रो विरायाको
 देखुन देखापनी नदेखा जे भै रहंछ ॥ २९ ॥ ॥ दर्शनीया श्रयन्मूर्खा धनवंतश्च निगुराणि ॥
 दूरस्थेपि च दृश्यंति किं सुकाश्वपुष्पिका ॥ ॥ देवनाकारांश्चाधनवंतपंडितं ह्यगुणज्ञाननभ
 याका मूर्खहस्तदेवनाकारांश्चाकशोभन्या सुवासनभयाको पलांसकाफूलजस्तो हुं ॥ ३० ॥
 मूर्खोपि परिहर्तव्य प्रत्यक्षो द्विपदः पशु ॥ भिद्यते वाक्यसत्यन अदृष्टकारको यथा ॥ ॥
 मूर्खरपशुवरो वरीकुरु कशोभन्या विज्ञाको कां ठोले दुःखदिया जे दुःखदिच्छ तसर्थ

श्री
 ४२

ले मूर्खको संग न गर्नु ॥ ३१ ॥ ॥ सर्पकूरः खरः कूरः सर्पात्तकूरः तरुतलः ॥ मंत्रोषधिवश
 सर्प खलके नो पशाम्यते ॥ ॥ सर्पपनी दुष्टहो दुर्जनपनी दुष्टहो सर्पतामंत्र औषधि
 ले वश्य गर्नु हुंछ दुर्जनभन्याको केही ले वश्य हुं देन ॥ ३२ ॥ ॥ हस्तिहस्तसहश्रेणा शत
 हस्तेन वाजिनः ॥ शृंगी नो दशहस्तेन देशत्यागेन दुर्जना ॥ ॥ हाती देखी हजार हात
 फरा करहुन घोडा देखी शय हात फरा करहुन सिंग दुन्या देखी दश हात फरा करहुन
 दुर्जन देखी देखेछाडनु ॥ ३३ ॥ ॥ हस्तिनां कुशहस्तेन कडिहस्तेन वाजिनः ॥ शृंगी ल
 गलहस्तेन खड्गहस्तेन दुर्जना ॥ ॥ हाती लाइ अंकुश ले वश्य गर्नु घोडा लाइ चावू

कलेवश्यगर्नु.सिंगहुत्यालाईलौहालेवश्यगर्नु.दुर्जनलाइ.खकदेखाईवश्यगर्नु॥३४॥
 ॥ ॥ दुर्जनपरिहर्तव्य.शास्त्रेणालंकृतोयदि॥मणिनालंकृतसर्व.किमसौनभयं
 करं॥ ॥ पंदितछतपनी.दुर्जनभया.तस्कोप्रसंगनगर्नु.तसदेखीदराउनु.कशो
 भया.मनीभयापनी.सर्वदेखीदराउनुचाहिंछ॥३५॥ ॥ पात्रापात्रविशेषेता
 धेनुपंगयोर्थथा॥ तृणातिश्रवतेक्षीरं.क्षीरातिश्रवतेविषं॥ ॥ सुपात्रकुपा
 त्रकोवहुतैफेछ.कशोभया.गाइलेतृणाछि.दुददिंछ.सर्वलेदुदछि.विष
 दिंछ.तसर्थले.कुपात्रकोसंगनगर्नु॥३६॥ ॥ दुदुशत्रुमितीमत्वा.नोपेसेता

श्री
 ४३

कदाचता॥ कालेदुर्जनमायांति.तृणास्थं वहिर्वीजवत्॥ ॥ सानुशत्रुछतपनीहेला
 नमर्नु.क्यानेभया.सुक्याकोकयारमा.अनिसानुछतपनी.सलंकछर.सबैभक्षपाछ॥३७॥
 सलिकेकरकेदोषा.अशीतीमधुपिंगले॥ शतंकारोचषोदेन.कुत्रस्यांतनिगयते॥ ॥
 देहाछेउसाठि६०दोषहुंछ.कुईयाछेउअशी८०दोषहुंछ.कांनाछेउशय१००दोषहुंछ.कु
 ब्राछेउअसंख्यदोषहुंछ॥३८॥ ॥ स्थानूकूदेदुराश्चारि.मित्रस्नेहपरित्यजेत्॥ विश्वाससमय
 कार्य.विनाशमुपगच्छति॥ ॥ दरवारवसछ.आफुदुर्जनछ.तेस्ताछेउविश्वासनगर्नु.विश्वास
 गन्यानाशहोत्॥३९॥ ॥ मृदुनैवमृदुहंति.मृदुनाहंतिदारुणं॥ नासाध्यमृदुनाकिंचित्.त

स्मातीक्षरातीमदु॥ ॥ कवलाले साहापनीका छु छिप्पाको पनीका छु कवलाले सिद्धिन
 भयाको केही छैन ॥ ४० ॥ वने प्रजो लितो वैही दहनू लानिरक्षति ॥ समूल मुन्मुलीय
 अद्योद्यो मद्रुशीतलं ॥ ॥ अग्निभयाको साहो उछालो लागूर सवे भस्म पार्छ तें पनी जरा
 तारा छुन पाति भयाको कवलो हो खलाछे उको हृष खोला ले जल मूल गरी वगाउं छन र ज
 ग पनी राखे नन ॥ ४१ ॥ स्थूल रोमा वलिवर्द्ध कन्या च बहु भाषिनी ॥ उषरा मित्र क्षत्राणि
 दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ॥ वडा रौं भयाको गोह वहुतै कुरा गर्न्या केटि ह्यो भूमी यत्रिको
 प्रसंग नगर्नु ॥ ४२ ॥ रहस्य भेद मैथुन्य पर दोषानुकीर्तन ॥ कलहा प्रकृति चैव दूरतः प

श्री
 ४४

रिवर्जयेत् ॥ मित्र को कुरो वाही रलै जान्या बुद्धिदार पराया का दोष गाड्या एस्ता को प्रसंग नग
 र्नु ॥ ४३ ॥ अस्त्रयाने गजोत्तमो गावश्चैव प्रश्रुतिकां ॥ तथा चांतपुरोदासी दूरतः परिवर्जये
 त ॥ ॥ फुकोद्योडो मदच ह्याको हाती भर्षर विया की गाइ दरवार को केटी एति वस्तु दे
 षी फल करहुनु ॥ ४४ ॥ दुर्जनं च सदा मित्रं परस्वामी रतास्त्रिये ॥ गोजीर्ता वस्तु जीर्ता
 च दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ॥ दुर्जन को प्रीति परपुरुष को प्रसंग गर्न्या अस्त्री वुछी गाइ पु
 रानो कपरा एति वस्तु लाई छोडनु ॥ ४५ ॥ न विश्व से दं मित्रस्य मित्रस्यापि न विश्व
 सेत् ॥ कदाचित् कुपितो मित्रं सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत् ॥ ॥ वैरी सित विश्वास नगर्नु ॥

मित्रसितपनीविश्वासनगर्नु. कानभन्या. कदाचित् मित्रफाणेपयाकादिनमासर्वगुह्यः
 प्रकाशकुण्ड॥४६॥ ॥नविस्वसेदंविश्वासेविश्वासेनैवविश्वसेत्॥विश्वासाभयमुत्प
 न्नी.मूलानैवनिर्कृतति॥ ॥अविश्वासीछेउविश्वासनगर्नु.विश्वासीछेउपनीविश्वा
 सनगर्नु.विश्वासवाटभयआउंछ॥४७॥ ॥नदीनांचनखीनांच.शृंगीनांशत्रपानि
 नां॥विश्वासनैवकर्तव्यं.स्त्रिषुराजकुलेषुच॥ ॥नदीको.नखकुल्याको.हातमाहति
 यारकुल्याको.सिङ्गकुल्याको.राजाको.अस्त्रीको.एतृकोविश्वासहुंदैन॥४८॥ ॥ श्री
 नदीतीरेषुयोवृक्षा.याचनारीनिराश्रया॥सामंतारिहितेराजा नभवन्तिचिरायुषः॥ ४५

नदीतारकोहृष.आफुआश्रमका.हीतनकुल्या.अस्त्री.मंत्रीनकुल्या.राजा.एतिवस्तुदेरे
 षयदेन॥४९॥ ॥यदिछेशास्वतंप्रीति.त्रिणितत्रनकारयेत्॥युतमर्थप्रयोगीच.पते
 सेदारदर्शनं॥ ॥जस्थाउंमासदाप्रीराखौभन्या.योतीमठोकनगर्नु.जुवानखेलनु.लियादि
 यानगर्नु.स्वास्त्रीएकलेवस्याकाथाउंमानजानु॥५०॥ ॥नगछेदुसविश्वास.नकुल्या
 छलविग्रहं॥आत्मनोपितथाक्रोधं.मित्रवैरंनकारयेत्॥ ॥दुससितविश्वासनगर्नु.
 दुससितऊगरापनीनगर्नु.दुससितछलपनीनगर्नु.दुसलाइमित्रपनीनगर्नु.वैरीप
 नीनगर्नु॥५१॥ ॥कुनयोमंत्रिराजानांविप्रंचविघलीपती॥प्रवाजीनंबुतंअष्ट.नसेवती

सदाबुधैः॥ ॥अन्याईमंत्रीहुन्याराजा.शुद्धिनीजोईहुन्यावांलगा.वतभंगहुन्याअतीत.एत्तिः
 कोशानीजनलेसेवानगनु॥५२॥ ॥कुमंत्रीनास्तिविश्वास.कुभार्यायांकुतो रती॥कुराज्य
 नास्तिनिवृत्ति.कुदेशेनास्तिजीवितं॥ ॥कुमंत्रीछेउविश्वासहुंदैन.कुअस्त्रीछेउप्रातिहुं
 दैन.कुराज्यमानिकोहुंदैन.कुदेशमाजीविकाहुंदैन॥५३॥ ॥नास्ति सत्यसदांचोरैनशौच
 विलीपतौ॥मद्यपेसुहृदं नास्ति.शुतकारेनयंनहि॥ ॥चोरछेउसत्यहुंदैन.शुद्धिनीजोई
 हुन्यावांलगाछेउशुद्धिहुंदैन.मदपिउन्याछेउहीतहुंदैन.जुवायाछेउयोतीनेथोकहुंदैन
 ॥५४॥ ॥द्वौविप्रौविप्रमग्निंच.दम्पत्योगुरुशिष्ययो॥अन्तरंनैव कर्तव्यं.हरस्पदवधम

श्री
 ४६

स्पव॥ ॥दुइवांलगाका.अग्निवांलगाका.दुइजोईपोइका.गुरुशिष्यका.श्रीमहादेववधमका
 एत्तिकामाजवाठनजानु॥५५॥ ॥लोकयात्राभयंलज्जा.दक्षितोत्पासिलता॥पंचतत्रनवि
 शंते.नकुर्यातत्रसंगति॥ ॥जस्थोउंमा.लोकलाईचयछेन.भलोछे.सुखछेन.लज्जाछे
 न.दक्षितादिग.तीर्थजात्राछेन.योपांचठोकनभयाकाथाउंमानजानु॥५६॥ ॥नाजनंः
 श्रुतायांति.नैवकल्पवदुश्रुतं॥ननारिस्थिरबुद्धिस्यात्.नमूर्खसस्तुतंवुजेत्॥ ॥
 गात्रलसेतोहुंदैन.विकल्पमनहुन्याछेउपदुनुमनहुंदैन.स्वास्तीछेउस्थिरबुद्धिहुंदे
 न.मूर्खछेउसस्तुतवातिहुंदैन॥५७॥ ॥अगाशेषाग्निसेषश्च.व्याधिशेषंतथैव

व॥ पुनः कर्तव्यं ते तस्याः तस्माच्छेवं न कारयेत् ॥ ॥ साङ्गकोशेषः अग्निकोशेषः रोगकोशेषः रत्न
कोशेषः नरावधनुः शेषराष्ट्राः फेरीवद्व्याह ॥ ५८ ॥ ॥ उद्यमकलहकंदुद्युतमद्यपरस्त्रियेः ॥
निद्रामैथुनमालस्यः सेवते ते हि वर्द्धनैः ॥ ॥ हृत्पत्कराउनुः मदपिउनुः जुवाषेलनुः परस्त्रीग
मनः निद्रागर्नुः मैथुनगर्नुः अलसीदुनुः ऐतिथोकसेवनगदीः वहुतवद्व्याह ॥ ५९ ॥ ॥ परदा
रापरस्वंचः परवादं परस्यच ॥ पहिहास्यंगुहस्थानैः यत्नतत्परिवर्जयेत् ॥ ॥ परस्त्रीः परध
नः परमर्मः परनिंदाः यतिठोकगुहस्थानमागर्नुः ॥ ६० ॥ ॥ परोक्षकार्ये हितारैः प्रत्यक्षपि
यवादिनं ॥ वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुंभं पयोमुखं ॥ ॥ कंदोपरिहान्याः मुख्याजीमिथोगरी

बोलना सुस्तानि को प्रसंग न गर्नु क्यान भन्या विषले भन्याको गाया का मु वमा दुद लेछाः
क्या जस्तो छ ॥ ६१ ॥ ॥ कुदेशं च कुवृत्तिं च कुभाष्यं कुनदिस्तथा ॥ कुपुष्पं च कुभोज्यं च वर्ज
यत्यतिउत सदा ॥ ॥ कुदेशं कुकर्म्मगत्या धातुं कुअस्त्री अश्रमनदी अश्रमद्रव्य अश्रद्धभोज
नश्च त्रिथोकज्ञानिपीडितले छोडनु ॥ ६२ ॥ ॥ उर्वशी यदि रूपे रा रमा यदिति लोत्रमा गो
पाली मेनका शैव वर्जनी यां परस्त्रिये ॥ ॥ उर्वशी रमा तिलोत्तमा गोपाली मेनका इनह
रुजन्तिके रूपवति हृतपनी परस्त्रीको प्रसंग न गर्नु ॥ ६३ ॥ ॥ येषु कार्येषु वृद्धेषु सह
सा विफलो दय ॥ विषतिषु महा दोष परिवर्जे द्विवक्षता ॥ ॥ ॥ अपहेले आरंभ गन्याको

कार्यमा. ३. कर्तलेहाने. विगारी दियो तपनी. उस्को विपत्तिमा हां नुछैन. विपत्तिमा हा. त्यावडो दोष
 छ. जानी जनले बुझिलिनु ॥ ६४ ॥ ॥ भक्ता भक्त सम पस्य. कार्य कार्य च तुल्यतां ॥ सदा कार्य
 सुसंदेहा. भेतव्य सर्वदा बुझै ॥ ॥ भक्त अभक्त हेरी कन. भलो मंदो कार्य लाउनु. कार्य गर्दाः
 जानी जनले दरमानी गर्नु ॥ ६५ ॥ ॥ भेतव्य मकुली नाना. राजा परोपजी विना ॥ भेतव्य जात
 शत्रुनी. कृत्वा पूर्वोपकारिनी ॥ ॥ उच्चनीच को कमाइ घान्या. राजा देखी दराउ नो चाहि छ. यो
 भंदा. आकुसर्म जान्या शत्रु देखी दराउ नो चाहि छ ॥ ६६ ॥ ॥ पाद पाणी भय वाट. पद्मानी
 शिशिरो भय ॥ पर्वतानी भय वज्रो. जंतूनी द्विपदो भय ॥ ॥ वृक्षको भय वायु. कमलको

श्री
 ४८

भयतु सारो. पर्वतको भय वज्र. जीवा जंतूको भय. मनुष्य ॥ ६७ ॥ ॥ माता यदि विष दयाहपि
 ता विक्रियते सुतं ॥ राजा हरति सर्वस्वं. सरागं कस्य जायते ॥ ॥ महतारीले विष बुवाईदा ॥
 बाबाले बेचनु भंदा. राजाले सर्वस्व लिंदा. यत्ति दुदामार सागर्मीको छ ॥ ६८ ॥ ॥ यत्र राजा
 स्वयं चौर समं त्रीस्व पुरोहित ॥ तत्राहं किं करिष्यामि. यतोरक्षा ततो भय ॥ ॥ जस्थाईमाः
 राजा. मंत्री. प्रोहीत. सेत आ पै चोर भया. कस्को काला ग्दु. जो हो वाट रक्षा. तता वाट भय
 आया. कक्षे क्या गर्नु ॥ ६९ ॥ ॥ विधाता लिखिता यस्य. ललाटे क्षरमा लिका ॥ देवोपिन
 हिसकनोति. संलित्य लिखित पुनः ॥ ॥ विधाताले. निधारमाले घ्याको अक्षर. देवताले

पत्रिमेदुसकटैनर॥७०॥ ॥कर्मतोहिप्रधानेन बुद्धिनां किप्रयोजनं॥पाषाणास्य कुतो बुद्धि
 तेन देवो भविष्यति॥ ॥कर्मलेन दिंदा बुद्धि को केहला गेन कर्मले दिंदा निर्वुद्धि तुंगो देवता
 हुंछ॥७१॥ ॥कर्मतापि प्रधानेन संतिकृष्टे शुभगुहे॥वशिष्ट दत्तलने पि जानकी दुःख
 भागिनी॥ ॥वशिष्टा विश्वरले दिया को शुभलग्न शुभग्रहपारी भला दिनमा सीता को वि
 वाहभयो कर्मलेन दिंदा सीता ले दुःख पात्री न॥७२॥ ॥सानू कूले भवेतस्मिन् दोषोपि
 गुणसंहति॥गुणोपि दोषतायांति वक्रिभूते विधातरि॥ ॥विधाता को कृपा हुंदा कुकर्म
 गत्यापनी शुक्रमगयोभनी जशपायो विधाता को विमुख हुंदा सुकर्म गत्यापनी कुक
 र्मगयोभनी अपजसपायो॥७३॥ ॥किं करोति नरः प्राज्ञो प्रत्यक्षे मास्व कर्मभिः॥प्राय

श्री
 ४६

नैव हि मूर्खानां बुद्धि कर्मानुसारिनी॥ ॥मनुष्यको बुद्धिभयापनी कर्मले जशायुमा डैछ
 तसो पुत्रुपर्छ मूर्खको मात्रे कर्मल बुद्धि संगै हि डछ॥७४॥ ॥हस्तस्य भूषणं दानं स
 त्य कण्ठस्य भूषणं श्रुतं च भूषणं कर्तुं भूषणो किंप्रयोजनं॥ ॥हातको शोभादा
 न मलाको शोभा सत्यवोलनु कोनको गहना धर्म कथा सुनु गहना लाउनु का प्रयोजन
 छ॥७५॥ ॥वरित्र भूषणं स्त्रीणां दुर्मानां पुष्य भूषणं स्ववृत्ति भूषणं पुंसं पति
 नां भूषणं कृपा॥ ॥अस्त्रीको शोभा सुचरित्र रुखको शोभा फल फूल पुरुषको
 शोभा स्ववृत्ति स्वामीको शोभा दया॥७६॥ ॥नक्षत्र भूषणं चन्द्रा नारीनां भूषणं

पति॥ पृथिवीभूषां राजा शीलं सर्वत्र भूषणं॥ ॥ नक्षत्रकोशो भाचंद्रमा अस्त्रीकोशो भा
 षसम् पृथिवीकोशो भाराजा सवैकोशो भा सुशील॥ ७७॥ ॥ महतापि भवश्रेष्ठं न नीचा
 मानमुत्तं॥ कंशारीपादघाटेन कालीयस्य विभूषणं॥ ॥ वडाकोलाटनिको नीचाकोमा
 नननिको कशोभन्या श्रीकृष्णजिले कालीनाग का कपालमा लूट मारी वस्ता कालीनागको
 कस्तोशोभाभयोथ्यो॥ ७८॥ ॥ शुचिभूमी गतंतोयं शुचिनाश पतिव्रता॥ शुचिदक्षम करीत
 जा संतोषो बालाशुची॥ ॥ धर्तिमाहा पाणिभया काथाउमा शुचि पतिव्रता अस्त्री शुचि
 क्षमावतं शुचि संतोषो बालाशुची॥ ७९॥ ॥ शुचिभूमी गतंतोयं यत्र लेपो न विद्य

श्री
 ५०

ते॥ लेपस्थानं परित्यज्य अग्न्यस्थाने शुचि शुचि॥ ॥ मनुष्यलेव गायको पाणि अशुचि॥
 आफेव गायको पाणि शुचि योमंदा माथिको पाणि शुचि॥ ८०॥ ॥ भस्मना शुद्धते कांशं ता
 म्रममेन शुद्धति॥ रजसा शुद्धते नारी नदीवेगेन शुद्धति॥ ॥ खरातिले कांशो शुद्ध
 छ अमिलाले तावो शुद्धहुंछ अतुस्नानले अस्त्री शुद्धहुंछ वेगले वग्या नदी शुद्धहुंछ॥ ८
 १॥ ॥ पितुरंतु पुरंदयात् मातुर्दयात्महानसं॥ गोषु चात्मसमंदयात् स्वयेमेव कृषिं व्रजे
 त॥ ॥ बाबुको अर्तिलिनु महतारीको भासाखानु गोरुको जीव आफु जीवएके मीनु आः
 फेले छेदिगनु॥ ८२॥ ॥ कपिलाक्षीरपातो न बालातीगमने न च॥ वेदाक्षरविशारेण स

श्रुद्रो नरकं व्रजेत् ॥ ॥ सुदले कैलागाई को दुदपिया. ब्राह्मणी को प्रसंग गन्धा. वेदको अक्षर विद्या
 रगन्धा. शुद्र नर्क पछ ॥ ८३ ॥ ॥ शुद्रि हस्तेन यो भुक्तं मासमेकं निरंतरं ॥ जियमानो भवे छुद्रो
 मृतत्वा नश्च जायते ॥ ॥ ब्राह्मणाले अखंडित गरि. एक मै हासं म. शुद्रिनी का हात वाट्या या दे
 यी. जिवंजी शुद्र भयो. मन्था पछि कुरको रुम हुन्छ ॥ ८४ ॥ ॥ सनहीनं सुयो नारी. द्यतहीनं
 तु भोजनं ॥ वस्त्रीहीनं मलंकारं. विद्याहीनं द्विजोत्तमं ॥ ॥ दुदन भया की अस्त्री. द्युन भ
 या को भोज. वस्त्रहीन को गहना. विद्याहीन भया को उत्तम ब्राह्मण. यत्रिथो कशो भित छे
 नः ॥ ८५ ॥ ॥ शोभते शलिले पद्मे. शोभते द्विषतो द्विजे ॥ शोभते तपसा युक्तो. व्रतां शुद्रस्य शोभ

श्री
 ५९

पनी दोष छैन मैथुन गन्धा पनी दोष छैन. नदपिया पनी दोष छैन. प्राणिका शोभाव. व्यवहार हो ॥
 तरय त्रिवस्तु लाइ छोडा. वरो पुण्य पछ ॥ ८२ ॥ ॥ चतुसागर पर्यंत. यो दद्यात्पृथिवीमिमं ॥ नखा दे
 वापियो मांसं. तुल्यमेतद्विदुर्बुधा ॥ ॥ समुद्र का चार द्याट को भित्र. पृथिवी दान गन्धा को रमाछाः
 सा सुनवाया को. वरो वर फल पाइन्छ. जानी जन ले बुझी लिनु ॥ ८३ ॥ ॥ अग्नि तापस्त्रियो मूर्ख
 सूर्य राजकुलानि च ॥ नित्यमेवोपचारेण. सद्यप्राणा हराति यद् ॥ ॥ अग्नि. जल. अस्त्री. मूर्ख
 सूर्य. राजा. सन्नि संग व्यवहार गरी रहनु. केही चाजो विद्या. पलक मा जीव जीछ. सद्यप्राणा हराः
 भंनु. यो छ थोक लाइ ॥ ८४ ॥ ॥ शुष्क नीसं स्त्रियो वृद्धा. बालार्क त हरो दधी ॥ प्रभाते मैथुन नि

द. सशप्राता हानि यद् ॥ ॥ श्रुत्या कोमा सुमया भुवि अस्त्री प्रसंगे ग. य. कोमको घों मताया. तह
 उदहीषाया. विहाया पदि मैथुनगया. निद्रागया. यो छठो कले प्राता घा. द. ग. ना. कुन ॥ २५ ॥
 सद्यमां सद्यंतं सद्य. बालस्त्रीशी भोजनं ॥ उलोदक तह छाया. सशप्राता. क. र. गि. यद् ॥ ॥ आलोम
 सुअ. लो. य. दुदभा. बालस्त्री. तागे पाति. रु. स. को. छाया. यो छठो कले प्राता रक्षा को कुन ॥ २६ ॥
 अनाद. गुतां पिष्ट. पिष्टा. द. गुतां प्य ॥ पयो. स्व. द. गुतां मां सं. मं. स. द. द. गुतां घृत ॥ ॥ भात भंदा
 आठ गुता वल रो. टि. म. छ. रो. टि. भंदा आठ गुता वल दुदभा. छ. दुद भंदा आठ गुता वल मा सुमा. छ. मा सु
 भंदा आठ गुता वल द्यु. ड. मा. छ. ॥ २७ ॥ ॥ पं. र. दि. प्र. ति. न. शं. ति. त. वे. लु. व. श्व. यो. न. र. ॥ अ. नि. मा.
 नी. च. का. नी. च. गुरु. दे. वी. त. थ. व. र. ॥ ॥ अ. हं. का. री. नो. मि. व. हु. त. मा. न. स्व. ज. न्या. को. मा. तुर. गु. र. प्रो. ही

श्री
 ५३

यो पं. र. ज. ना. ध. र. क. ना. श. दु. छ. ॥ २८ ॥ ॥ गो. भि. वि. प्रै. थ. वे. दे. श्व. स. प्र. मि. स. त्प. वा. दि. मि. अ. लु. व. द. न.
 श. लि. श्व. स. प्र. मि. र्क. य. ते. म. ही. ॥ गार्. लि. वा. स. ला. ले. वे. द. ले. अ. लो. मि. ले. स. ती. ले. स. त्प. वा. दि. ले. द.
 ता. ले. यो. सा. ट. ठो. क. ले. पृ. थि. वी. था. म्या. को. छ. ॥ २९ ॥ ॥ अ. सा. रे. पि. ह. र्सी. सा. रे. सा. र. मे. कं. च. तु. द. यं. ॥
 का. श्यां. वा. स. स. तां. सं. गो. गंगा. भं. श. न्नु. पू. ज. न. ॥ ॥ यो. सं. सा. र. मा. से. वे. अ. सा. र. हो. हो. त. प. नी. च. र. व. स्तु. सा.
 र. छ. क्वा. श. म. न्या. का. शि. वा. स. गर्नु. सा. धु. जन. को. संग. ॥ गंगा. स्नान. गर्नु. गंगा. जल. ले. श्री. महा. दे.
 व. को. पू. जा. गर्नु. ये. त्ति. सा. र. छ. ॥ १०० ॥ ॥ इ. ति. श्री. चान. क. सा. र. सं. ग्र. हे. त. नि. य. श. त. कं. स. मा. त्प. र. ॥ ३१ ॥ श्री
 से. १२२२. साल. जे. छ. धु. दि. द. ते. ज. श. लि. धि. तं. सं. पूर्ण. म. ॥ ॥ यो. दु. स्त. क. ल. तं. कु. मा. र. वो. को. मि. ता. श. दि.
 र्वा. जि. बी. स. वो. प्र. मा. जो. ग. प. ला. दो. स. के. न. गु. न. ग. री. स. र. ज. ग. र. सा.

श्री
 ५४

यो. नी.
 ११७
 ASHA ARCHIVES
 ३५६५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥